चकमक

अगस्त, 1997 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 7.00

पूर्वा वशिष्ठ, चौथी, भोपाल, म.प्र.

सम्पूर्णा विस्वास, पाँच वर्ष, नई दिल्ली

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-13 अंक-2 अगस्त, 1997

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह, मनोज निगम, अशोक रोकड़े

चकमक का चंदा

एक प्रति : सात रुपए
छमाही : 40.00 रुपए
वार्षिक : 75.00 रुपए
दो साल : 140.00 रुपए
तीन साल : 200.00 रुपए
आजीवन : 750.00 रुपए
साथ में आपके किसी मित्र या परिचित को एक साल की मुफ़्त सदस्यता।
आजीवन : 1000.00 रुपए
साथ में एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर 50% छूट।

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ़्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई -1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016
(म.प्र.)
फोन : 563380

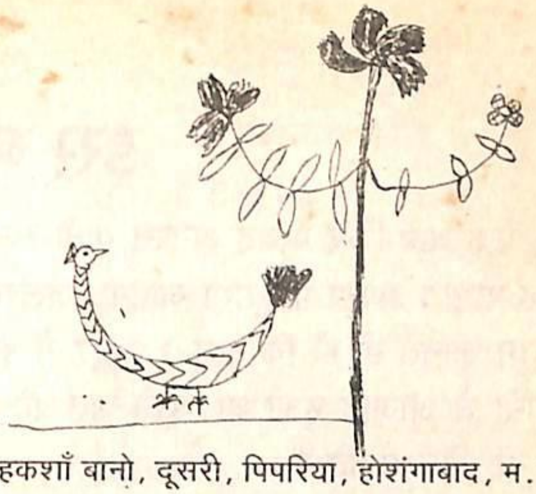

महकशाँ बानो, दूसरी, पिपरिया, होशंगाबाद, म. प्र.

144 वें अंक में ....

विशेष

7 ❑ मैं हूँ तितली

कहानी

20 ❑ दो बिल्लियाँ

कविताएँ

6 ❑ तितली
32 ❑ फूलों पर आती है तितली

धारावाहिक

38 ❑ क़िस्सा - बुरातीनो का -15

हर बार की तरह

24 ❑ खेल कागज़ का
29 ❑ वर्ग पहेली
34 ❑ माथा पच्ची
मेरा पन्ना पृष्ठ 5, 18, 19
28, 36 और 37 पर

और यह भी

2 ❑ इस बार की बात
3 ❑ पाठक लिखते हैं
14 ❑ चकमक समाचार
16 ❑ तुम भी बनाओ : दूधराज
30 ❑ सवालीराम
33 ❑ पहेलियाँ

आवरण : मोनार्क तितलियों का एक झुण्ड। यह चित्र नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी की 'एनीमल्स देट ट्रैवेल' किताब से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात

लो, एक बार फिर पन्द्रह अगस्त यानी स्वतंत्रता दिवस आ गया। जगह-जगह राष्ट्रीय झण्डा फहराया जाएगा, जलसा होगा और लड्डू बँटेंगे। यह तो तुम जानते ही हो कि सन् 1947 में इसी दिन हमारा देश अंग्रेज़ों की गुलामी से आज़ाद हुआ था। इसी बात को याद करने के लिए हर साल हम यह दिन मनाते हैं।

आज़ादी के आन्दोलन के बारे में तुमने स्कूल की अपनी किताबों में पढ़ा ही होगा। और अब तक ना पढ़ा हो तो पढ़ ही डालो। क्योंकि इस बार स्वतंत्रता का जश्न साल भर मनाया जाने वाला है। यानी पन्द्रह अगस्त 1998 तक। चारों तरफ इसकी ही धूम रहने वाली है। अरे भई, इस बार आज़ादी की पचासवीं वर्षगाँठ जो है।

हमारे देश को आज़ाद हुए पचास साल हो गए हैं। इस दौरान देश ने विभिन्न क्षेत्रों में क्या प्रगति की है, यह साल भर चलने वाले तरह-तरह के कार्यक्रमों में दर्शाया जाएगा। अख़बार, रेडियो और टेलीविजन के साथ-साथ तुम्हारे आस-पास, तुम्हारे स्कूल में भी इसकी चर्चा होगी ही। सम्भव है तुम भी ऐसे किसी कार्यक्रम में भाग ले रहे होगे। ख़ैर.....

अब जब चारों तरफ इस पचासवीं वर्षगाँठ की धूम है तो चकमक इससे कैसे अछूती रह सकती है। हमने सोचा है कि अगले साल भर तक इस सिलसिले में कुछ-न-कुछ सामग्री हर अंक में देने की कोशिश करेंगे। इसमें तुम्हारी भेजी सामग्री यानी तुम्हारे मन की बातें, चित्र, कहानी, कविताएँ भी होनी ही चाहिए।

चलो शुरुआत इस सवाल से करते हैं कि आज़ादी आख़िर है क्या? 'हमारा देश आज़ाद है' या 'हम आज़ाद हैं' का क्या मतलब है? तुम अपने आस-पास जो कुछ भी देखते हो क्या उसमें आज़ादी है? क्या तुम्हें पढ़ने, लिखने, खेलने, तरह-तरह के सपने देखने और उनको साकार करने की आज़ादी है? ऐसे तमाम सवाल हैं, उनके बारे में सोचो और लिखो। जो लिखो वह हमें ज़रूर भेजना।

तो इस बार आज़ादी की वर्षगाँठ मनाना और जी भरके लड्डू खाना।

❑ चकमक

मोहन प्रसाद शाक्यवार, तीसरी, सेमराहाट, गुना, म.प्र.

पाठक लिखते हैं

इस बार का (मई, 1997) अंक मिला। गिलहरियों के बारे में पढ़कर मुझे याद आया कि 8-9 साल पहले एक गिलहरी मेरी दोस्त थी। मैंने तय किया कि उसके बारे में लिखूँ।

हर महीने चकमक का इंतज़ार रहता है। चकमक में आजकल अच्छी कहानियाँ आने लगी हैं पर ज़रा जानी-पहचानी। इसलिए कोई अलग साहस-कथा या रहस्य-कथा आए तो मज़ा आए। धारावाहिक बुरातीनो को पढ़ना काफी अच्छा लगता है।

मई, 1997 के अंक में धूमकेतु के बारे में पढ़कर काफ़ी अच्छा लगा। रोचक जानकारी मिली। ऐसी ही जानकारी अगले अंक में भी हो, ऐसी इच्छा है।

❑ **चारुस्मिता, वेड़छी, गुजरात**

चकमक के मई एवं जून अंक पढ़े। दोनों ही अंक पाठकों के ज्ञान का दायरा बढ़ाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। वैज्ञानिक विषयों पर नियमित रूप से कार्टून आदि भी दें। इसी तरह भारतीय राज्यों की भौगोलिक, सांस्कृतिक विशेषताओं से जुड़ी सामग्री भी प्रकाशित करें। चकमक जैसी अन्य कोई पत्रिका अखिल भारतीय स्तर पर इतनी लोकप्रिय नहीं है, इस नाते चकमक से ऐसी अपेक्षा है।

❑ **अशोक मनवानी, वैल्लोर, तमिलनाडु**

मैं राजीव गांधी शिक्षा मिशन के अन्तर्गत आने वाले शिक्षा विहीन गाँव में एक शिक्षिका हूँ तथा अपने गाँव के बच्चों को पढ़ाती हूँ। जब मैं आठ-दस वर्ष की थी तब मैंने आकाशवाणी से प्रसारित विज्ञान विधि कार्यक्रम में भाग लिया था तथा इनाम भी पाया था। इनाम के अन्तर्गत आपकी ज्ञानवर्धक व अति रोचक पत्रिका चकमक मुझे एक वर्ष तक निशुल्क भेजी गई थी।

अब जबकि मैं एक शिक्षिका हो गई हूँ, मुझे अपनी शाला के बच्चों के लिए 'चकमक' जैसी उपयोगी सिद्ध होने वाली पत्रिका की अति आवश्यकता है। अतः मुझे चकमक पत्रिका शीघ्र भेजें।

❑ **नीता तैलंग, शिक्षिका, वैकल्पिक शाला, दग्धा, पन्ना, म.प्र.**

आपकी पत्रिका से मेरा परिचय निशांत नाट्य मंच, दिल्ली के माध्यम से हुआ। उन्हीं के माध्यम से यह पत्रिका बच्चों को पढ़ने के लिए उपलब्ध कराई जाती है। बच्चे इस पत्रिका को बहुत आनन्द और जिज्ञासा से पढ़ते हैं और अगले अंक की सदैव प्रतीक्षा करते हैं।

❑ **सुनील राठौर, दिल्ली**

यहाँ से काटें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक भेजना शुरू करें–

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

सदस्यता शुल्क रु. .... माह/वर्ष के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

<u>सदस्यता दर</u>

छह माह	:	40.00 रुपए
एक साल	:	75.00 रुपए
दो साल	:	140.00 रुपए
तीन साल	:	200.00 रुपए
आजीवन	:	750.00 रुपए *
आजीवन	:	1000.00 रुपए ॰

* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

॰ इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

बसन्त प्रसाद भुसल, तेरह वर्ष, भोपाल, म. प्र.

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

....

....

यहाँ से काट दें

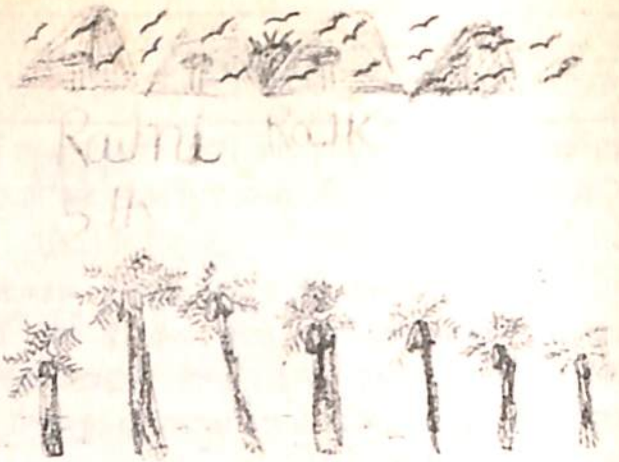

रजनी रजक, पाँचवीं, भोपाल, म. प्र.

पिंकी, चौथी, धार, म. प्र.

मेघेन्द्र कुमार साहू, तीसरी, रानी तराई, दुर्ग, म. प्र.

मेरी गिलहरी

निलल साहेब, पाँचवीं, लखोली, रायपुर, म.प्र.

बहुत पुरानी बात है। 8-9 साल पहले जब हम बनारस में रहते थे तब की । वहाँ का मेरा घर काफ़ी बड़ा था। उससे भी ज़्यादा बड़ा था हमारा बरामदा व घर के सामने लगा हुआ बड़ा सा नीम का पेड़। उस पेड़ पर बहुत सारे पक्षी और गिलहरियाँ रहते थे। मैं रोज़ शाम को बरामदे में रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े डालती। गिलहरियाँ वहाँ रोज़ खाने आती थीं। उनमें से एक गिलहरी मेरी दोस्त बन गई थी। वह रोज़ आती थी। पहले तो वह बरामदे के नीचे वाली रोटी खाती थी। फिर बाद में मैं रोटी के टुकड़े हाथ में लेकर बैठती थी, उसमें से खाने लगी। वह मेरी अच्छी दोस्त बन गई।

वह रोज़ शाम को आती। बरामदे की सीढ़ी पर फुदकती हुई ऊपर चढ़ती और देखती कि मेरे सिवाय कोई और वहाँ पर है या नहीं। अगर अम्मा, बाबा या कोई और होता तो ऊपर नहीं आती थी। अगर कोई भी न हो, सब अन्दर हों और मैं आराम कुर्सी पर आँख बंद करके या खुली रखं के हाथ में रोटी के टुकड़े लिए अकेली बैठी हूँ तब वह धीरे-धीरे आती। पर कोई और भूल से भी आ गया तो तुरन्त भाग जाती। फिर इधर-उधर देखते हुए वापस आती और मेरी कुर्सी पर चढ़कर मेरे हाथ में से रोटी लेकर खाती या फिर लेकर भाग जाती। यह उसका रोज़ का नियम था।

फिर हम गुजरात मेरे दादाजी के पास चले आए। उसको भी नौ साल हो गए हैं। वह गिलहरी ज़िन्दा है या नहीं, वह भी अब मुझे पता नहीं। पर उस गिलहरी की याद मेरे दिल में क़ायम है। कितनी सुन्दर और मज़ेदार थी वह। हर समय इधर-उधर फुदकती रहती। दौड़ा-दौड़ी करती रहती। कभी पेड़ पर चढ़ती तो कभी उतरती। कभी इधर दौड़ती, कभी उधर दौड़ती। मैं जब भी कोई गिलहरी देखती हूँ मुझे वह गिलहरी ही याद आती है। आप ही बताइए मैं भला उसे कैसे भूल सकती हूँ?

चारुस्मिता गाडेकर, वेडछी, गुजरात

तितली

सुन्दर-सुन्दर प्यारी तितली
दूर न हमसे जा री तितली

मत छूओ, बस दूर से देखो
नाज़ुक - नाज़ुक न्यारी तितली

फूलों से रस चूस रही हैं
नन्ही-नन्ही सारी तितली

जारे कल्लू! तुझसे कुट्टी
पकड़ के तूने मारी तितली

नीले, पीले, लाल, गुलाबी
रंगों की फुलवारी तितली

दूर-दूर तक उड़कर जाती
कभी न हिम्मत हारी तितली

❑ अशोक अंजुम

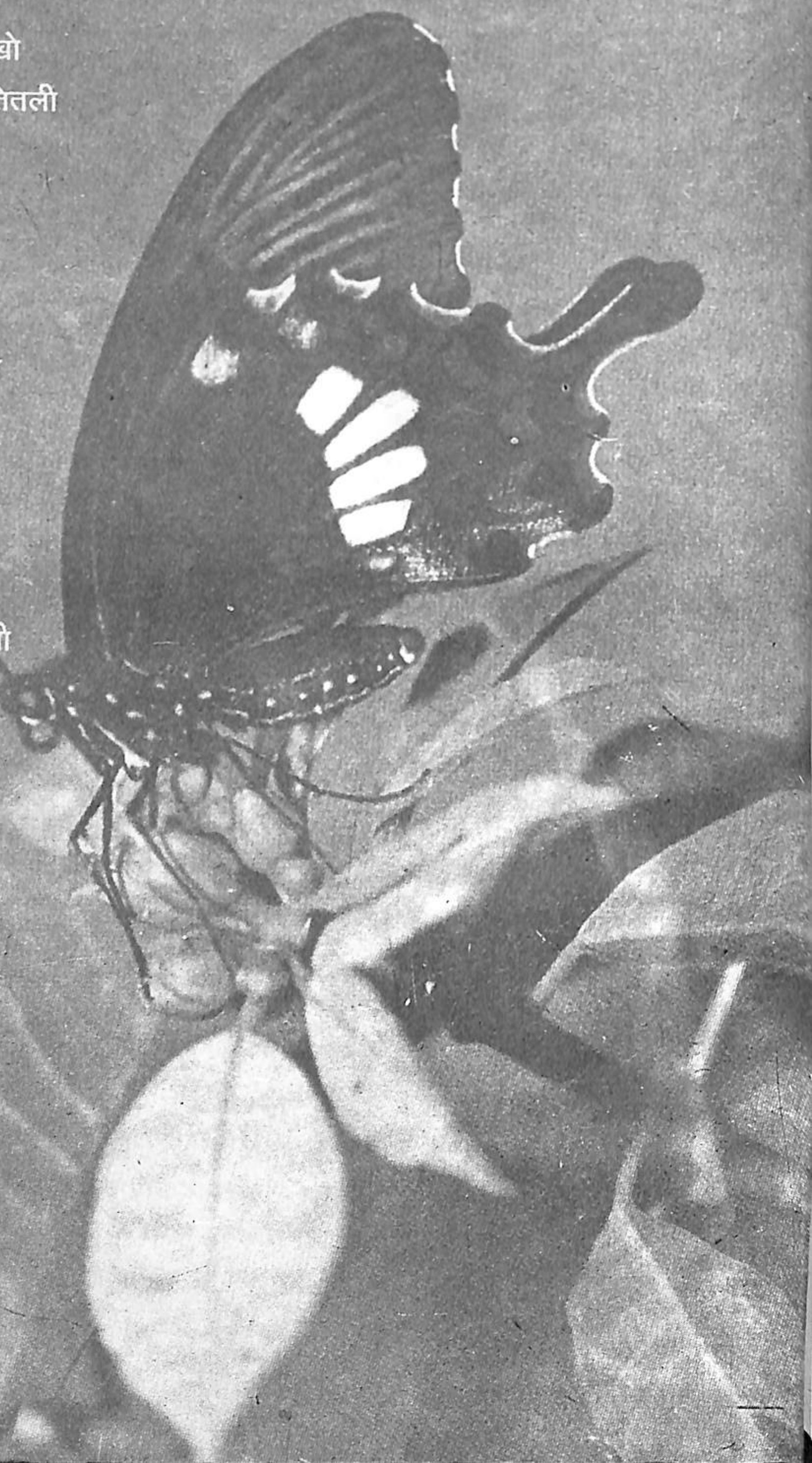

मैं हूँ तितली

तुमने मुझे पेड़-पौधों के आसपास उड़ते देखा होगा। और तो और तुममें से लगभग सभी ने मुझे पकड़ने की कोशिश भी की होगी। मज़ा आता है न बगीचे में हम रंग-बिरंगी तितलियों के पीछे भागने में। इस भागा-दौड़ी में तुमने मेरे बारे में थोड़ा-बहुत तो जाना ही होगा। मैंने सोचा मैं भी तुम्हें अपने बारे में कुछ बताऊँ। हज़ारों साल से हम तितलियाँ मनुष्यों के आसपास रहती आई हैं। बहुत पुरानी कविताओं, कहानियों और चित्रों में भी तुम तितलियों का ज़िक्र पढ़ और देख सकते हो। कपड़ों पर, गहनों पर और डाक टिकटों तक पर कई डिज़ाइन हम से यानी हमारे पंखों के सुन्दर डिज़ाइनों से प्रभावित होकर बनाए जाते हैं।

मैं कीट वर्ग की ही एक सदस्य हूँ। हमारी लगभग सत्तर हज़ार प्रजातियाँ पाई जाती हैं। जिनमें कई रंगों और डिज़ाइनों में सुन्दर-सुन्दर तितलियाँ दिखाई देती हैं। अपने सुन्दर पंखों के बारे में भी तुम्हें बता दूँ। आमतौर पर हमारे चार पंख होते हैं। ये पंख शल्कों से ढके होते हैं। जब कभी तुम मुझे पकड़ लेते हो तब तुम्हारे हाथ में मेरे पंखों का रंग लग जाता है। यह रंग दरअसल मेरे पंख के शल्क ही हैं जो बारीक पाउडर के रूप में तुम्हारे हाथ में चिपक जाता है। इन शल्कों के कारण ही मैं इतनी रंग-बिरंगी दिखाई पड़ती हूँ।

मेरा खाना-पीना फूलों से ही चलता है। मेरे मुँह में एक नली होती है। यह नली घड़ी की कमानी की तरह कुण्डली के आकार में मुड़ी होती है। इस नली के ज़रिए ही मैं फूलों का रस पी लेती हूँ। हम दिन में ही उड़ते-घूमते हैं। जबकि हमारे जैसे ही दिखने वाले पतंगे रात में निकलते हैं।

अपने दुश्मनों से बचने के लिए हम तितलियों के पास बचाव के कई तरीक़े हैं जैसे कुछ तितलियाँ जब कहीं बैठती हैं तो अपने दोनों पंखों को एक-दूसरे से चिपका लेती हैं ताकि पंखों के नीचे का हल्का रंग ही दिखाई पड़े।

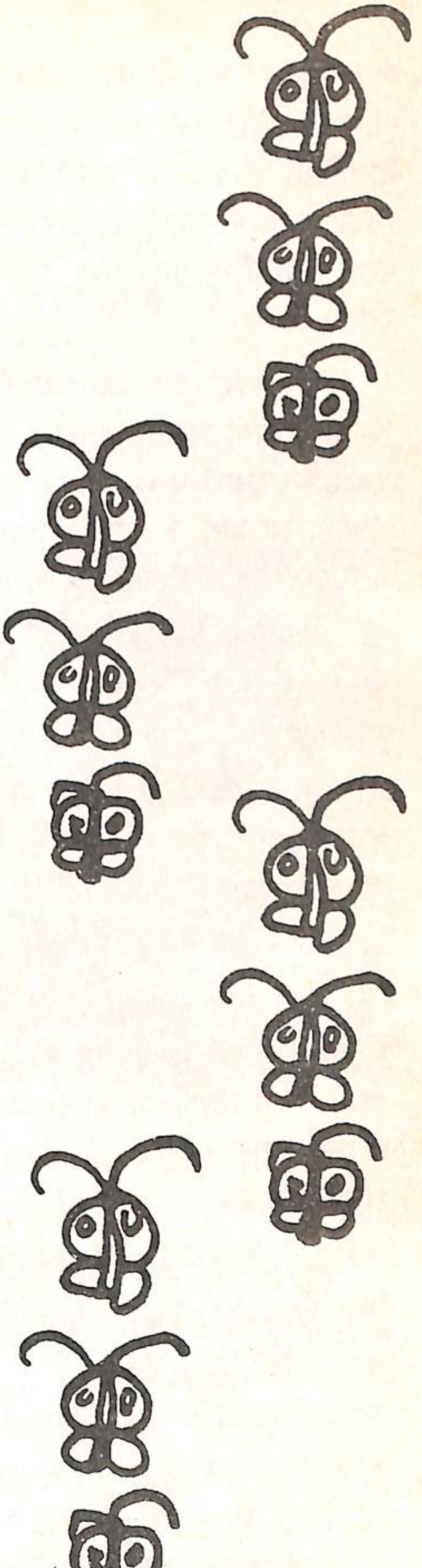

यह नीचे का रंग भी ऐसा होता है कि वातावरण से मिल जाता है। और इस तरह वे दुश्मन से बच जाती हैं। कई तितलियों के पंख पर तुमने डिज़ाइन बने देखे होंगे। ये डिज़ाइन कभी-कभी इस तरह के होते हैं कि जहाँ हम रहते हैं वहाँ के फूल-पत्ती, पत्थरों आदि में घुल-मिल जाएँ।

इसी तरह कुछ तितलियों के पंखों पर आँखों जैसी डिज़ाइन बनी होती है जिससे डरकर दुश्मन दूर ही रहते हैं। हमारी कुछ प्रजाति की तितलियाँ ज़हरीली या बेस्वाद भी होती हैं। मज़े की बात यह है कि ज़हरीली तितलियों के रंग और डिज़ाइन वाली दूसरी तितलियाँ *जब पक्षियों को दिखाई* पड़ती हैं (जो कि ज़हरीली नहीं होतीं, सिर्फ़ उनके जैसी दिखती हैं) तो उन्हें भी ये पक्षी ज़हर वाली या बेस्वाद तितलियाँ समझकर छोड़ देते हैं।

हमारा जीवन चक्र चार अवस्थाओं से गुज़रकर पूरा होता है-अण्डा, लार्वा (इल्ली), प्यूपा (शंखी) और तितली। आमतौर पर मादा तितलियाँ अण्डे देने के लिए किसी पेड़ या पौधे के पत्ते को चुनती हैं।

जिस तरह चिड़ियें एक जगह से दूसरी जगह जाती हैं लम्बी-लम्बी यात्राएँ करती हुई, उसी तरह कुछ प्रजाति की तितलियाँ भी लम्बा सफ़र तय करके एक से दूसरी जगह जाती हैं। ये सफ़र ज़्यादा जाड़ा या गर्मी से बचने के लिए किए जाते है।

वैसे तो मेरे बारे में बताने को और भी बहुत है लेकिन अभी यहीं ख़त्म करते हैं। हाँ, तुम अपने घर के बाग-बगीचे या आसपास के बाग-बगीचे में मुझे ढूँढो और पहचानो। यहाँ हम कुछ चित्र दे रहे हैं। शायद ये तुम्हारी कुछ मदद कर सकें। चलते-चलते एक बात और कहना चाहती हूँ, अगर बाग-बगीचों में कीटनाशक का उपयोग न किया जाए, जिससे हमारी इल्लियाँ (कैटरपिलर) मर जाती हैं तो तुम अपने आसपास रंग-बिरंगी तितलियाँ काफ़ी संख्या में देख सकते हो।

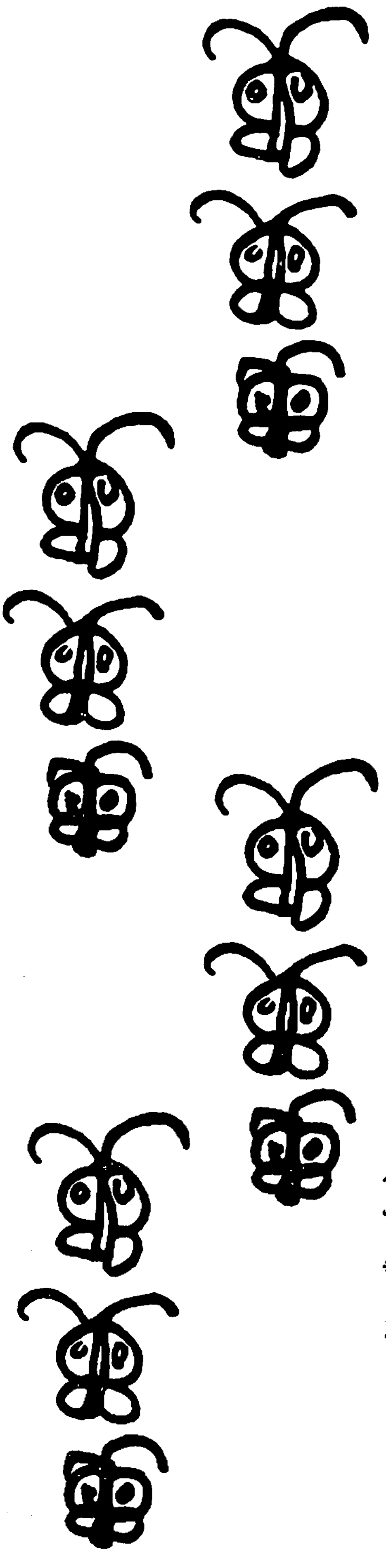

तितली के चित्र: उत्सव पटेल, पाँच वर्ष, भोपाल, म.प्र.

तितलियाँ तरह-तरह की

काले और पीले रंग के पंखों वाली तितली। यह हिमालय के इलाके में पाई जाती है। इस तितली की उड़ान ऐसी लगती है जैसे वह छलाँग लगा रही हो।

सफ़ेद पंखों पर काली-पीली धारियों से बनी डिज़ाइन वाली तितली। यह पहाड़ी इलाकों में पाई जाती है।

भूरे रंग पर पीले निशान और बीच में सफ़ेद निशान वाली एक छोटी तितली।

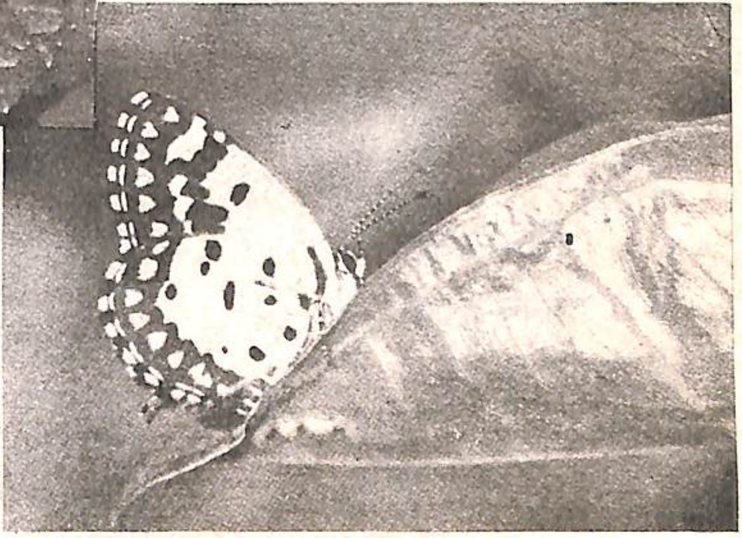

यह छोटी तितली अपने पिछले पंखों पर बनी लाल किनार के कारण बहुत सुन्दर दिखाई देती है। यह आमतौर पर दक्षिण भारत में पाई जाती है।

①

②

③

④

तितलियाँ अजब-गज़ब

1. **यह** पूँछ वाली तितली भारत के जंगलों में पाई जाती है। जब यह कहीं बैठी होती है, तब भी अपने पंख हिलाती रहती है।

2. **यह** है ज़ेब्रा तितली। लग रही है न ज़ेब्रा जैसी डिज़ाइन। यह मादा तितली है। इसकी नर तितली की डिज़ाइन ऐसी नहीं होती।

3. **पूँछ** वाली एक और तितली। हल्के पीले या सफ़ेद रंग पर काली पट्टियों की डिज़ाइन वाली यह तितली देखो।

4. **भूरे** नारंगी से रंग पर भूरे रंग के निशान से बनी यह डिज़ाइन कैसी लगी?

ऐसे होता है जन्म एक तितली का

तितली ने अंडे देने के लिए जगह चुनी है; सूँघकर, चखकर और छूकर।

फिर एक पत्ती पर अण्डे दिए।

अण्डे में से लार्वा (इल्ली) निकलने की तैयारी में। और आख़िरकार बाहर आ ही गया।

लार्वा बाहर निकलकर सबसे पहले अण्डे के खोल को ही खाता है।

लार्वा अपने पहले भोज का मज़ा ले रहा है।

लार्वा इस टहनी पर बड़ा होगा। पकड़ के लिए वह रेशम बुन रहा है।

बहुत महीन रेशम बुना है।

लार्वा के ऊपर एक खोल बनने लगता है।

अब लार्वा अपनी त्वचा का कुछ हिस्सा छोड़ देता है।

लार्वा अवस्था का आख़िरी चरण।

शंखी (प्यूपा) अवस्था

तितली के मुँह की नली भी अभी अन्दर मुड़ी हुई है।

तितली धीरे-धीरे शंखी वाले खोल से बाहर आ रही है।

तितली का जन्म हो चुका है और वह खुलकर अपने पंख फैला रही है।

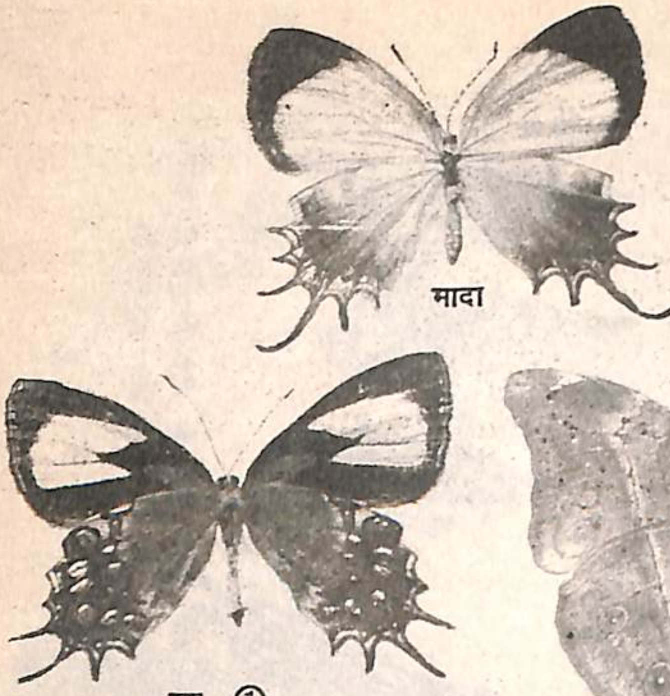

मादा

नर ①

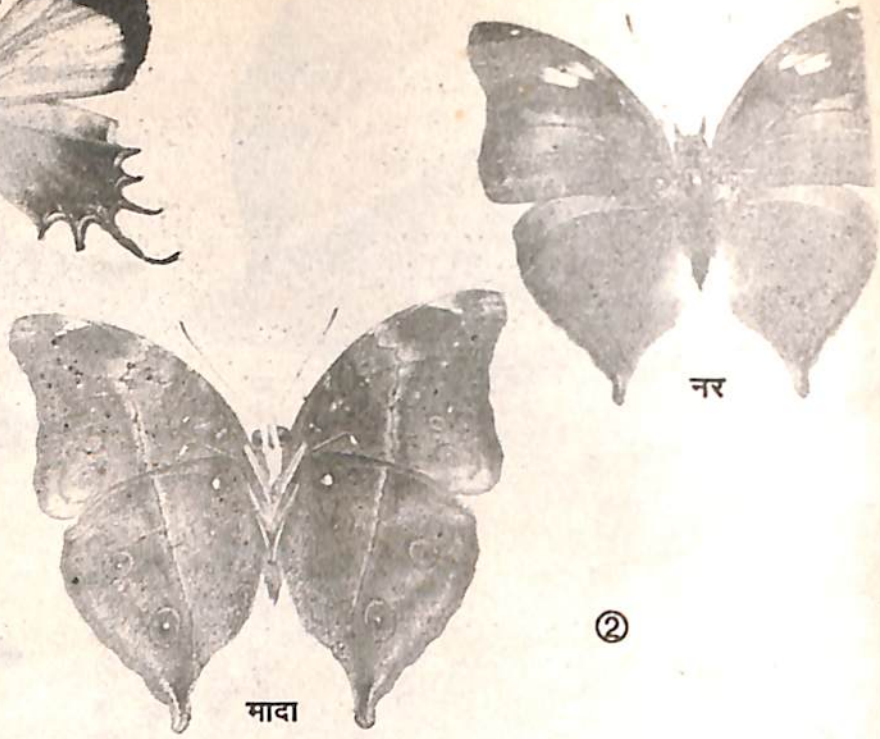

नर

मादा

②

वाइसराय

मोनार्क

③

1. **पिछले** पंखों पर नुकीले किनारे वाले नर-मादा तितलियों का एक जोड़ा। दोनों के पंखों पर अलग-अलग डिज़ाइन होती है।
2. **ये** है पत्तियों की-सी डिज़ाइन वाली तितलियों का जोड़ा। नर और मादा के पंखों पर अलग-अलग डिज़ाइन होती है। मादा के पंख पर ऐसी गोल आकृतियाँ होती हैं, जैसे सूखी पत्ती का हिस्सा हो।
3. **मोनार्क** तितली। एकाध बार चखने के बाद, इसे देखते ही पक्षी समझ लेते हैं कि यह भोजन नहीं बन सकती है। यह बेस्वाद होती है। यही कारण है कि इसके जैसी दिखने वाली वाइसराय तितली बेस्वाद न होते हुए भी पक्षियों से बच जाती है।
4. **और** ये है पतंगे जैसी दिखने वाली बड़ी तितली का जोड़ा। पूरे पंख फैले हों तो लगभग तीन इंच की होती है। मादा तितली में नारंगी रंग पर काले निशान कुछ कम होते हैं, जबकि नर तितली पर ज़्यादा।

मादा ④ नर

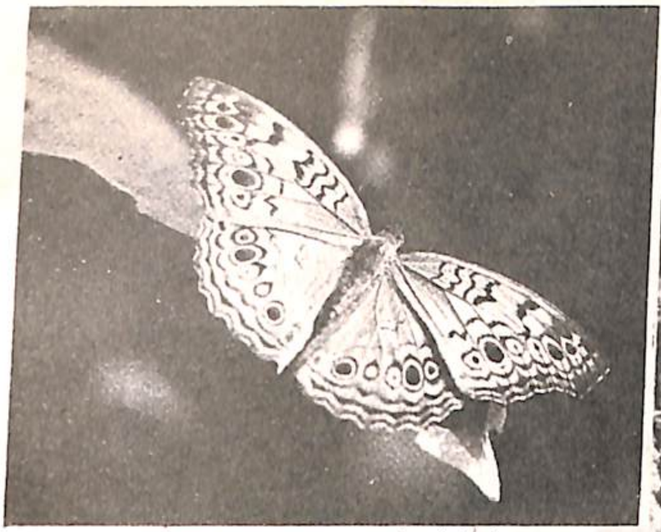

एक सुन्दर तितली। यह धान के खेतों के आसपास और भारी वर्षा वाले इलाक़ों में दिखाई देती है।

जंगल में मोनार्क तितलियों का एक झुण्ड। ये तितलियाँ हमेशा झुण्ड में ही यात्रा करके एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाती हैं।

पंखों पर पूँछ वाली तितली। यह मध्य भारत में खूब पाई जाती है और नमी वाली जगहों में रहना पसन्द करती है।

हरी-हरी तितलियों का एक समूह।

तितलियों के चित्र इन किताबों से साभार लिए गए हैं – आई विटनेसं हैंडबुक : बटरफ्लाईस एंड मॉथस, बटरफ्लाईस ऑफ़ इंडिया : टाटा केमिकल्स लिमिटेड की डेस्क डायरी, लाइफ़ नेचर लायब्रेरी की द इन्सेक्टस, नेशनल ज्योग्राफी की हाऊ एनीमल विहेव।

गतिविधि शिविर

मई, 1997 में एकलव्य द्वारा देवास में पाँच दिन का सृजनात्मक बाल-गतिविधि शिविर का आयोजन किया गया। इसमें शहर के सरकारी एवं गैर सरकारी विध्यालयों के 50 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इन सबने पाँच दिन तक बहुत सी मनपसंद गतिविधियाँ **'खेल-खेल में करके सीखो'** के माध्यम से, मिलकर सीखीं और सिखाईं।

शिविर के दौरान बच्चों ने जिन गतिविधियों का प्रशिक्षण लिया उसमें - विज्ञान की कुछ मूल अवधारणाओं को समझने के लिए कम लागत के विज्ञान के कुछ मनोरंजक प्रयोग, जैसे - इन्द्रधनुष बनाना, जादुई आग लगाना एवं रंगों का मेला आदि शामिल थीं। अन्य गतिविधियों में साइक्लोस्टाइल पत्रिका कैसे निकालें? कविता-कहानी बनाना, गीत, नाटक, अभिनय गीत, मैदानी खेल, दीवार अखबार, पुस्तकालय, आकाश दर्शन, पत्तियों/विभिन्न तरीक़ों से चित्रकला, स्प्रे पेंटिंग, क्रोमेटोग्राफी (रंगों का पृथक्करण), प्रश्नमंच, माथापच्ची (माचिस की तीलियों द्वारा विभिन्न ज्यामितीय आकृतियाँ बनाना), पहेलियाँ और सवाल बूझना, ऑरीगेमी, परिचय खेल, विज्ञान के खिलौने, अंधविश्वास संबंधी प्रयोग इत्यादि को शामिल किया गया था।

इस तरह की गतिविधियों के माध्यम से बच्चों ने लगातार इन पाँच दिनों में अपना उत्साहवर्द्धन किया और कई सारे दोस्त भी बनाए। अंत में बच्चों की एक टीम ने साइक्लोस्टाइल मासिक पत्रिका **बालकलम** एवं दीवार अख़बार नियमित निकालने में पूरी तरह से सहयोग करने का इरादा ज़ाहिर किया। शिविर में देवास के स्थानीय स्रोत व्यक्तियों का भरपूर सहयोग रहा। शिविर समाप्ति की औपचारिक घोषणा सामूहिक रूप से एक शैक्षिक गीत ''लुका छिपी येल्हो छिपी आगड़–बागड़ जाई रे..... '' के साथ की गई।

रपट : दिनेश पटेल, एकलव्य देवास, म. प्र.

खेलो-सीखो मेला

बाल मेले बच्चों की भावनाओं को अभिव्यक्ति देने के सशक्त माध्यम हैं। इनके माध्यम से बच्चे अपनी जिज्ञासाओं के उत्तर आसानी से पा सकते हैं। बाल मेले में खेल-खेल में बच्चे बहुत कुछ सीख सकते हैं। चीज़ों, विचारों और घटनाओं को जानने की उनमें सहज जिज्ञासा होती है। उनकी इसी प्रवृत्ति और इच्छाओं को आकार देने के उद्देश्य से धार के लाल बाग परिसर में बाल विज्ञान मेला **खेलो-सीखो** का आयोजन 3 से 6 जून, 97 तक किया गया।

इस बाल मेले में लगभग पाँच से पन्द्रह वर्ष आयु के 200 बच्चों ने विविध गतिविधियों को खेल-खेल में सीखा। इनमें प्रमुख गतिविधियाँ थीं ऑरीगेमी, प्रश्न मंच, माथापच्ची, विज्ञान के प्रयोग, चमत्कारों की समझ, नाटक, गीत, कबाड़ से जुगाड़, चित्रकला एवं पुस्तकालय आदि। साथ ही स्लाइड शो और ट्रेन में सफ़र का भी बच्चों ने आनंद लिया। नगरपालिका ने बच्चों और कार्यकर्त्ताओं को ट्रेन में सफ़र के लिए मुफ्त पास जारी किए थे। मेले में बच्चों को कम्प्यूटर,

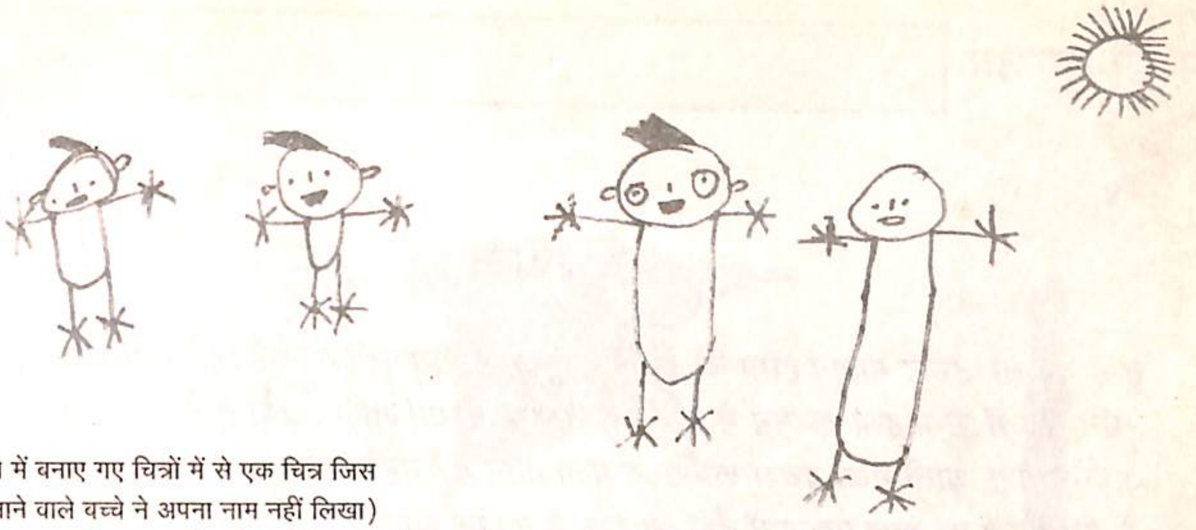

(धार मेले में बनाए गए चित्रों में से एक चित्र जिस पर बनाने वाले बच्चे ने अपना नाम नहीं लिखा)

पर्यावरण, सामाजिक कार्य, पत्रकारिता, स्वतंत्रता संग्राम, प्रशासन आदि के जानकार लोगों के साथ बातचीत का मौका मिला। 5 जून, 97 को विश्व पर्यावरण दिवस पर बच्चों ने चित्र बनाए। साथ ही पर्यावरण मित्र नामक टोपी बच्चों को बाँटी गई।

इस चार दिन के मेले के समापन पर श्री ललित मोहन टापल्या द्वारा लिखित बहुत ही रोचक, मन को मोहने वाला नाटक **जंगल देश हमारा** मंचित किया गया। इस अवसर पर बच्चों द्वारा तैयार **धार घोषणा पत्र** जारी किया गया जिसमें यह संकल्प प्रमुख है कि इस तरह का आयोजन धार में हर साल किया जाएगा। बच्चे मेले के समापन के साथ ही माँग करने लगे कि ''ऐसा मेला फिर कब होगा, जल्दी हो....... जल्दी हो......।'' ज़िला साक्षरता समिति, म. प्र. विज्ञान सभा, ज़िला शहरी विकास अभिकरण, बाल पंचायत और बाल विकास अभिकरण धार के मिले-जुले प्रयास से यह मेला आयोजित किया गया था।

रपट : नवीन भंवर, चकमक क्लब, धार, म. प्र.

हिरणखेड़ा में बाल मेला

7, मई 1997 को हिरणखेड़ा में बाल मेला हुआ। बालमेले का प्रारम्भ मैदानी खेल **लीडर** से हुआ। खेल के बाद **जादू** गतिविधि में माचिस से कुछ जादू दिखाए गए। नासिक से प्रशिक्षण प्राप्त करके लौटे **चक्रम चकमक क्लब** के राकेश ने कठपुतली के मनमोहक प्रदर्शन से बच्चों का मन मोह लिया। ऑरीगेमी को अगली गतिविधि बनाया गया। बच्चों ने चूहा बनाना सीखा। अब बारी थी **चित्र प्रदर्शनी** देखने की जिसे कि एक स्थान पर लगाया गया था। सभी बच्चों ने चित्र प्रदर्शनी को देखा। कुछ चित्र बच्चों के द्वारा काफ़ी सराहे गए। इसके बाद बाल सभा का आयोजन किया गया। अंतिम क्रियाकलाप के रूप में पुरस्कार वितरण किया गया। इसमें होशंगाबाद एकलव्य से प्राप्त कुछ बच्चों की **उड़ान** की पुरस्कार प्रति एवं भोपाल एकलव्य से दीपाली और नाज़मा को भेजी गई पुस्तकें भी शामिल थीं। अंत में मिठाई वितरण के साथ हमने बच्चों से विदा ली।

शबाना, चौथी, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

रपट : चम्पालाल कुशवाह, चक्रम चकमक क्लब, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

दूधराज

तुम्हें यह तो ज़रूर मालूम होगा कि हमारे देश का राष्ट्रीय पक्षी कौन है। हाँ, सही सोचा तुमने। हमने तुम में से कइयों के मन में मोर नाचते देख लिया! लेकिन क्या तुम्हें यह मालूम है कि अपने प्रदेश, यानी मध्य प्रदेश का राज्य पक्षी कौन है? चेहरे सोच में डूब गए हैं पर कुछ पकड़ में नहीं आ रहा, है न। भई आज हम जिस चिड़िया का मॉडल बनाने जा रहे हैं, वही दूधराज तो हमारे मध्य प्रदेश का राज्य पक्षी है।

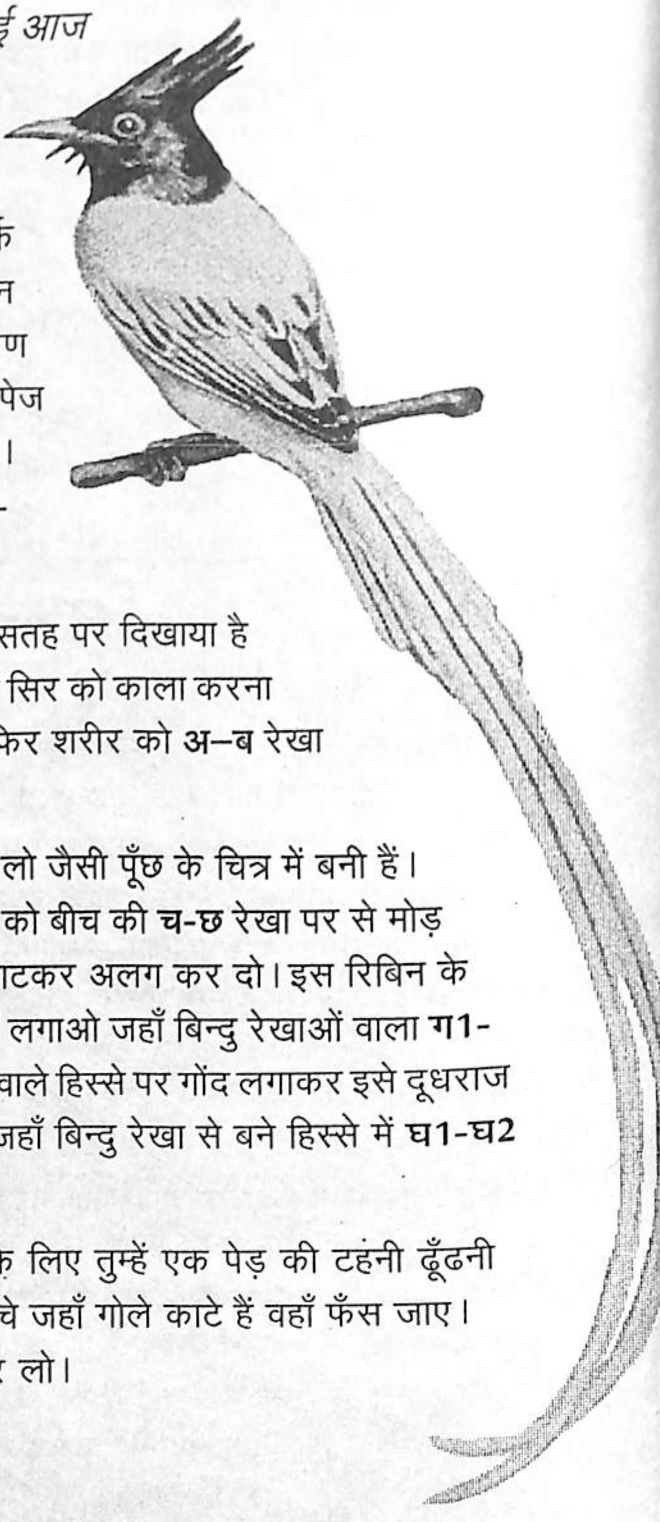

इसे बनाना काफ़ी आसान है क्योंकि यह सिर्फ़ चमकदार सफ़ेद और काले रंग का होता है। कोई रंगीन पेंसिलों की ज़रूरत नहीं। बस कैंची, गोंद और साधारण पेंसिल जुगाड़कर शुरू हो जाओ। सबसे पहले अगले पेज पर बना दूधराज का चित्र किसी काग़ज़ पर उतार लो। शरीर, पूँछ और पूँछ के बीच से निकलने वाली रिबिन-सी पट्टी को बाहरी रेखा से काट लो।

अब शरीर वाले हिस्से पर रंग कर लो। जैसा **ख** सतह पर दिखाया है वैसा ही दोनों (**क और ख**) सतहों पर रंग करना है। यानी सिर को काला करना है और निचले शरीर पर परों की डिज़ाइन बनानी है। फिर शरीर को **अ–ब** रेखा पर से मोड़ लो।

पूँछ वाले हिस्से पर पेंसिल से वैसी ही रेखाएँ बना लो जैसी पूँछ के चित्र में बनी हैं। टूटी रेखाएँ या बिन्दु वाली रेखाएँ मत बनाना। फिर पूँछ को बीच की **च-छ** रेखा पर से मोड़ लो। अब रिबिन-सी आकृति के बीच की काली पट्टी काटकर अलग कर दो। इस रिबिन के **ग1-ग2** वाले हिस्से पर गोंद लगाकर उसे पूँछ पर वहाँ लगाओ जहाँ बिन्दु रेखाओं वाला **ग1-ग2** चौखाना बना है। और फिर इस पूरी पूँछ के **घ1-घ2** वाले हिस्से पर गोंद लगाकर इसे दूधराज के शरीर वाली दोनों परतों के बीच में वहाँ चिपकाओ जहाँ बिन्दु रेखा से बने हिस्से में **घ1-घ2** लिखा है।

दूधराज तो तैयार है। पर अब इसे खड़ा करने के लिए तुम्हें एक पेड़ की टहनी ढूँढनी होगी। टहनी इतनी मोटी हो कि दूधराज के पैरों के नीचे जहाँ गोले काटे हैं वहाँ फँस जाए। तो ऐसी टहनी ढूँढो और अपने दूधराज को खड़ा कर लो।

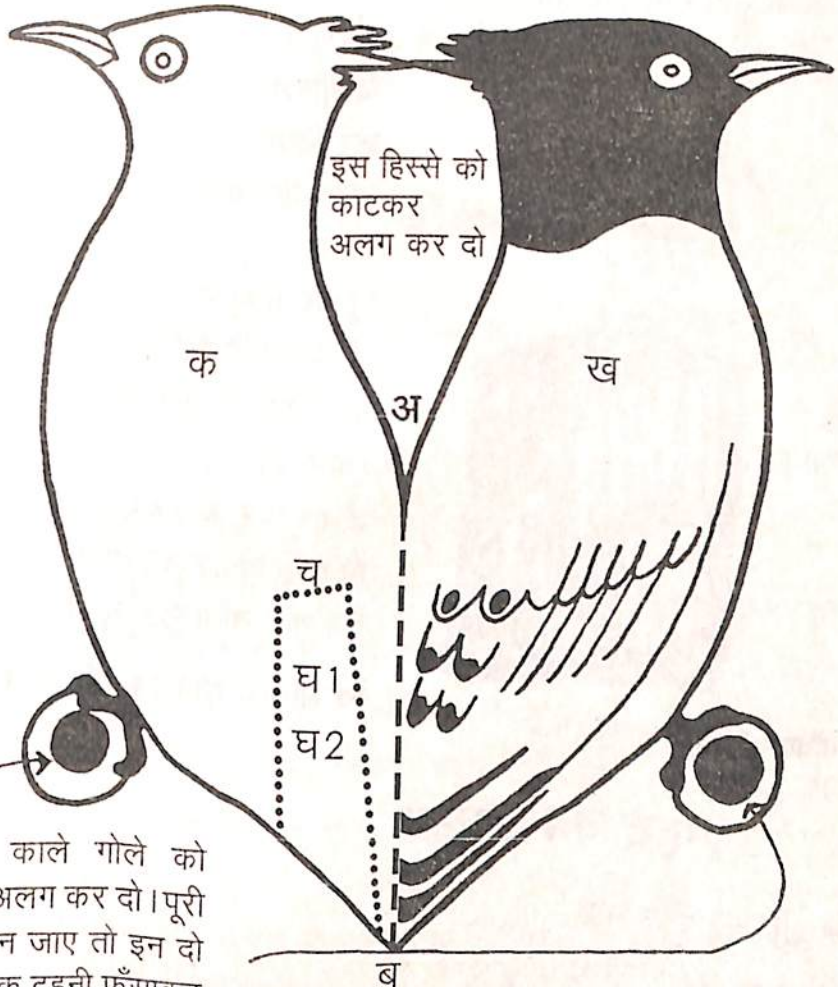

बीच के काले गोले को काटकर अलग कर दो। पूरी चिड़िया बन जाए तो इन दो गोलों में एक टहनी फँसाकर उसे खड़ा कर लो।

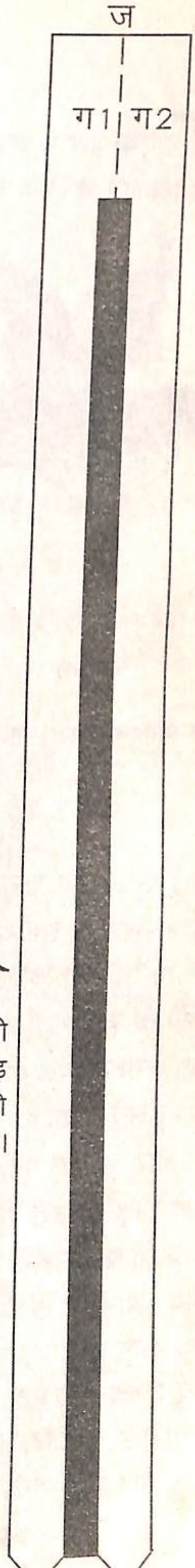

रिबिन को **ज** पर बनी टूटी रेखा पर से मोड़ लो। बीच की काली पट्टी काटकर अलग कर दो।

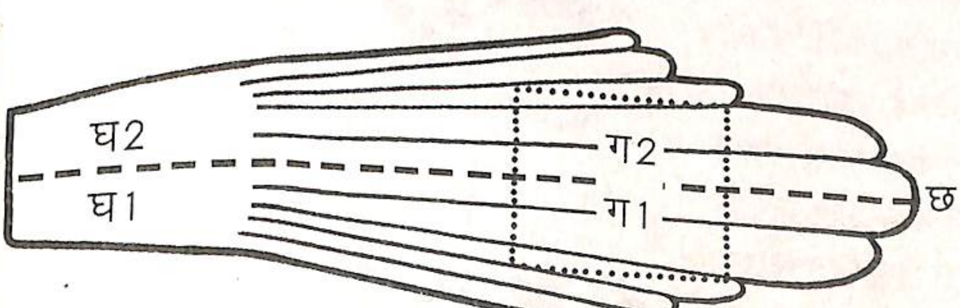

तोता उड़ गया

एक बार मैं अपने मामा जी के यहाँ गया। वहाँ मामाजी ने एक तोता पाल रखा था। वह रोज़ तोते को खाना खिलाते थे। एक बार मामा जी की छः वर्षीय लड़की चीनू ने अपने पापा से पूछा कि पापा मैं तोते को किशमिश खिला दूँ। मामा ने धुन में 'हाँ' कर दिया। फिर ध्यान आते ही उन्होंने कहा कि बेटा तोता किशमिश नहीं खाता। तो चीनू ने पूछा क्या मैं निकाल लूँ। तो मामा ने धुन में 'हाँ' कह दिया। तो चीनू ने पिंजड़े का दरवाज़ा खोलकर किशमिश निकाल ली। तभी मामा को ध्यान आया कि दरवाज़ा खोलने पर तोता उड़ सकता है। इस ख़्याल के साथ ही मामा पिंजड़े की तरफ दौड़े। लेकिन तब तक तोता उड़ चुका था।

आलोक शर्मा, 14 वर्ष, उज्जैन, म. प्र.

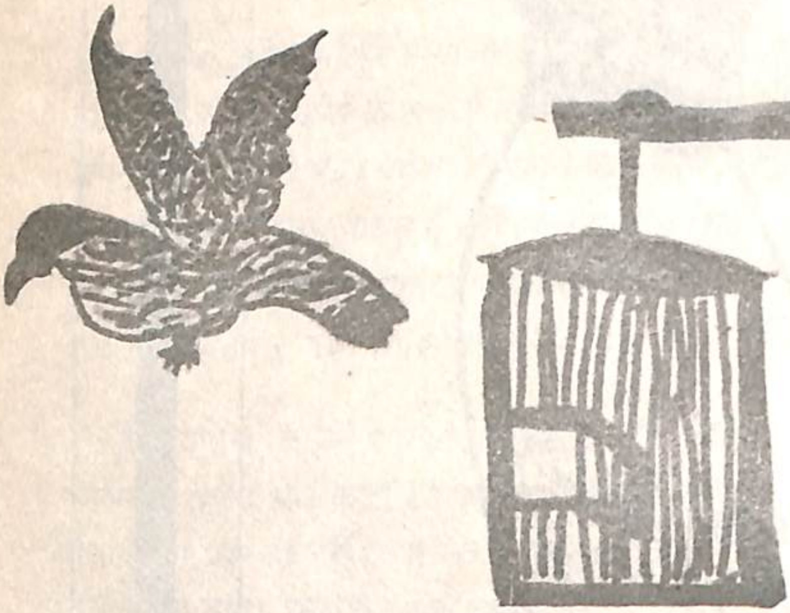

श्रीकान्त देवरा, सातवीं, सोमगाँवकलाँ, होशंगाबाद, म.प्र.

शहद का लालच

चिंटू एक बहुत शरारती बच्चा था। वह रोज़ नई-नई शरारतें करता था। चिंटू को आम बहुत पसन्द थे। गर्मियों की छुट्टियाँ चल रही थीं। चिंटू अपनी मौसी के यहाँ गया था। उसकी मौसी के यहाँ बहुत बड़ा आम का पेड़ था। वह एक दिन घर पर अकेला था। उसने सोचा कि मैं पेड़ पर चढ़कर आम खाता हूँ। और वह पेड़ पर चढ़ गया। इससे पहले कि वह आम तोड़ता, उसे एक मधुमक्खी का शहद से भरा छत्ता दिखा। उसने सोचा कि क्यों न शहद खाया जाए, आम तो कभी भी खा सकते हैं। और उसने एक आम तोड़कर छत्ते पर ज़ोर से दे मारा। सारी मधुमक्खियाँ उसके ऊपर झपट पड़ी और जगह-जगह पर काट लिया। उसका पूरा शरीर सूज गया। उसे चार दिन तक हॉस्पीटल में रहना पड़ा।

स्नेहा टिल्लू, सातवीं, धार, म. प्र.

गिरिराज सिंह, पाँचवीं, पंचमपुरा, मुरैना, म. प्र.

बच्चों का खेल बारिश

बारिश पड़ती टप-टप-टप
बूँदें गिरतीं टप-टप-टप
बच्चों का मन करे
नहाने का छप-छप-छप
मम्मी नहीं जाने देगी
हमारी मम्मी तो मारेगी
मम्मी तो नहीं मारेगी
चलो सहेली नहाएँ छुपकर
बारिश का मज़ा लें जमकर
घर जाएँगे गीले कपड़ों को सुखाकर

राधा

बैजंतीमाला झरवड़े, सातवीं, बैतूल, म. प्र.

फन्दा गिरा

सर्दियों के दिन थे। मेरी मम्मी स्वेटर बुन रहीं थीं। मैं वहीं पर उछल-कूद कर रही थी। मेरी मम्मी मुझे बार-बार डाँट रहीं थीं। अचानक मेरी उछल-कूद से उनके हाथ पर झटका लगा और मेरी मम्मी ने मुझे ज़ोर से डाँटते हुए कहा, ''देखा फन्दा गिर गया ना।''

यह कहते हुए मेरी मम्मी अपना काम करने लगीं। थोड़ी देर बाद उनकी नज़र मुझ पर पड़ी। उन्होंने देखा कि मैं चारपाई के नीचे कुछ ढूँढ रही हूँ। उन्होंने पूछा, ''तुम क्या ढूँढ रही हो?''

तो मैंने कहा, ''आपका जो फन्दा गिरा है उसको ढूँढ रही हूँ।'' यह सुनकर सब लोग ठहाका मारकर हँसने लगे। मेरी समझ में नहीं आया कि सब लोग क्यों हँस रहे हैं। मेरे पूछने पर मम्मी ने बताया कि फन्दा ज़मीन पर नहीं गिरा है बल्कि सलाई से उतर गया था।

श्रुति चौबे, चौथी, इलाहाबाद, उ. प्र.

आलू

लोमड़ कहीं से लाया आलू
लोमड़ ने सोचा इस गेंद से खेल बनाऊँ
इतने में कहीं से आ गया भालू
भालू ने सोचा इसे मैं पालूँ
इस चीज़ को कभी न देखा भालू
इतने में बोल उठा आलू
सुन मेरे भइया भालू
मैं तो हूँ सीधा साधा आलू
मुझे यहाँ ले आए लोमड़, भालू

शिवलाल स्वामी, सातवीं, पूगल, बीकानेर, राजस्थान

दो बिल्लियाँ

❑ समद बहरंगी

गर्मी की रात थी। अमावस के कारण अन्धेरा काफ़ी गहरा था। ऊपर से तारे भी नहीं निकले थे। आधी रात गुज़र चुकी थी। चारों तरफ शान्ति थी। केवल झींगुर की आवाज़ रात की शान्ति को भंग कर रही थी। एक काली बिल्ली दीवार के एक तरफ से आई, वह सिर झुकाए हुए थी। सूँघती हुई धीरे-धीरे वह आगे बढ़ रही थी।

एक सफ़ेद बिल्ली भी दीवार के दूसरी तरफ से आ रही थी और वह भी सिर को झुकाए कुछ सूँघती धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी।

दोनों आगे बढ़ रही थीं। बढ़ते-बढ़ते आख़िर बीच दीवार पर उनके सिर आपस में ज़ोर से टकराए। दोनों ही गुर्रा उठीं 'पीफ-पफ ....' करती एक बालिश्त पीछे हटीं। फिर एक-दूसरे को घूरने लगीं। दोनों के बीच का फ़ासला दो बालिश्त से अधिक न था। दोनों के दिल धड़-धड़ करके धड़क रहे थे। क्षण-भर दोनों यूँ ही बैठी रहीं। कुछ भी न बोलीं, केवल बैठी एक-दूसरे को ताकती रहीं। अन्त में, काली बिल्ली आगे बढ़ी, सफ़ेद बिल्ली भी अपनी जगह से हिली और तेज़ी से बोली, "म्याऊँ! .... आगे मत बढ़ना।"

काली बिल्ली ने उसकी धमकी की ज़रा-सी भी परवाह न की और थोड़ा आगे बढ़ी। दोनों धीरे-धीरे गुर्रा रही थीं। अब दोनों के बीच का फ़ासला केवल बालिश्त भर रह गया था। काली बिल्ली हर पल आगे बढ़ रही थी। सफ़ेद ठहरी नहीं, फौरन पंजा काली की तरफ बढ़ाकर एक झन्नाटेदार चाँटा काली बिल्ली के मुँह पर मारा। उसके कान का पर्दा फट गया। फिर चीखकर बोली, "म्याऊँ...... बेवकूफ़ कहीं की! मना नहीं किया था कि आगे मत बढ़ना?" काली बिल्ली कुछ कम न थी। उसने भी नहले पर दहला मारा

और चीखकर कहा, "फाफ फ ...!" लेकिन वह अपनी शत्रु को घायल न कर सकी। क्रोध से काँपती हुई पीछे हटी और तीखे लहज़े में बोली, "म्याऊँ....रास्ता दो ताकि मैं आगे जाऊँ....वरना कुछ अनर्थ घटा तो समझना उसका कारण स्वयं तुम हो।"

सफ़ेद बिल्ली ठठा मारकर हँस पड़ी। अपनी मूँछों पर जीभ फेरती हुई बोली, "कैसे-कैसे चुटकुले तुम्हें याद हैं, तुम्हें रास्ता दूँ ताकि तुम आगे बढ़ो? अगर रास्ता देना बड़ा पुण्य का काम है तो यह पुण्य का काम स्वयं क्यों नहीं करती हो? इधर हटो ताकि मैं दीवार के उस तरफ जाऊँ।"

काली बिल्ली बोली, "मैं कह रही हूँ परे हट! मुझे रास्ता दे। मैं पहले जाना चाहती हूँ। फिर तुम जिस मरघट पर जाना चाहती हो जाना।"

सफ़ेद बिल्ली ऊँची आवाज़ में खिलखिलाकर हँस पड़ी, "अगर इस बार मेरी बात नहीं सुनी तूने, तो एक बार में तुझे निगल लूँगी।"

काली बिल्ली भी क्रोध से लाल-पीली हो गई और चीखकर बोली, "म्याऊँ....चलो, वापस लौटो, मुझे रास्ता दो ताकि मैं आगे बढ़ूँ। मरी चुहिया कहीं की।"

इस बात ने सफ़ेद बिल्ली को अन्दर तक बेध दिया, चेहरे से हँसी ग़ायब हो गई। काँपती आवाज़ से, जो उसके हलक से फूट रही थी बोली, "म्याऊँ! ....क्या कहा चुहिया? बेवकूफ़...! फिफ-फ। .....पकड़ो...फि-फ-फ....।" कहकर दोबारा अपना पंजा काली बिल्ली की तरफ बढ़ाया। इस बार काली बिल्ली पीछे हट गई। सफ़ेद बिल्ली का पंजा उसकी नाक से टकराया और ख़ून का फव्वारा छूट पड़ा। अब सफ़ेद बिल्ली को कोई रोक नहीं सकता था। वह गुस्से में आ चुकी थी। अपनी पीठ मोड़ चुकी थी। बाल खड़े हो गए थे। वह इस तरह से गुर्रा रही थी कि उसके शोर से झींगुर की आवाज़ दब गई थी।

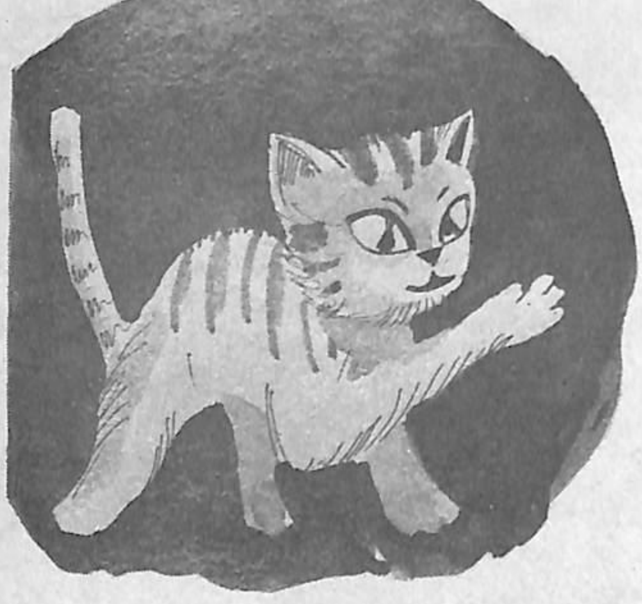

उसी समय एक फूल बाग में खिलने वाला था। वह बीच में ही रुक गया और एक बड़ा-सा तारा आकाश से टूटा।

सफ़ेद बिल्ली गुस्से में उबलती हुई बोली, "म्याऊँ! .... नहीं सुना क्या? मैंने कहा, पीछे हटो और मुझे रास्ता दो? ....काली मरी चुहिया।"

अब काली बिल्ली के हँसने की बारी थी। हँसी और बोली, "अधिकतर चूहों का रंग सफ़ेद होता है काला नहीं, इस तरह से तुम हुईं मरी चुहिया। अब अधिक मत चिल्लाओ कि लोग जाग जाएँ और हमें आकर मारें। मैं स्वयं तुम्हारी गुर्राहट से डरी नहीं हूँ कि पीछे हटूँ। मैं यहीं बैठ जाती हूँ। जब जाना तो पीछे लौट जाना।"

सफ़ेद बिल्ली अब तक सामान्य हो चुकी थी। बोली, "मैं थक चुकी हूँ। काश! तुम दोपहर को हसन आगा की रसोई में होतीं। तब जानतीं कि मैं पूरे तीन घण्टे चूहे की प्रतीक्षा में उसके बिल के सामने बैठी रही थी।"

काली बिल्ली इस बात पर कुछ बोली नहीं। दोनों बड़ी शान्त बैठी हुई थीं। सफ़ेद बिल्ली भी बैठी थी मगर चुपचाप थी। बच्चे के रोने की आवाज़ उभरी। फिर चुप हो गया। झींगुर बोलने लगे, फूलों ने खिलना आरम्भ कर दिया। दो क्षण तक बिल्लियाँ एक-दूसरे को ताकती रहीं। मगर आगे नहीं बढ़ीं। पता चल रहा था कि दोनों में अब सब्र समाप्त हो रहा था। दोनों चाह रहीं थीं कि बात दूसरी आरम्भ करे।

एकाएक सफ़ेद बिल्ली बोली, "मैंने समस्या का हल पा लिया है।"

काली बिल्ली बोली, "हल क्या है?"

सफ़ेद बिल्ली बोली, "मुझे बहुत ज़रूरी काम है बहुत-बहुत ज़रूरी। तुम लौट जाओ। दीवार के अन्त पर। ताकि मैं आगे बढ़ जाऊँ और फिर तुम अपनी राह चली जाना।"

काली बिल्ली को हँसी आ गई, "अजीब राह निकाली है। मुझे ख़ुद बहुत ज़रूरी काम है, क्षण-भर भी रुकना मेरे लिए नामुमकिन है।"

समद को चकमक का सलाम!

समद बहरंगी ईरान के एक क्रांतिकारी लेखक थे। 1936 में जन्मे समद ने 1957 में एक छोटे से गाँव में शिक्षक का काम शुरू किया।

उन्होंने छोटे बच्चों के लिए कई कहानियाँ लिखीं। कुछ लेख उन्होंने ईरान में शिक्षा की अमेरिकी प्रणाली की आलोचना करते हुए लिखे। समद ने अपने क्रांतिकारी विचार अन्य विषयों पर भी व्यक्त किए। उन्होंने ईरान के खूनी शाही शासन और उसके हितैषी देशों की आलोचना की। जिसके कारण अगस्त, 1968 में समद को ईरान की 'अरास' नदी में डुबोकर मार दिया गया।

पर समद मरे नहीं हैं। वे अपनी कहानियों में आज भी ज़िन्दा हैं। उनकी यह कहानी हमने उनके संग्रह 'काली छोटी मछली' से नासिरा शर्मा के सौजन्य से साभार ली है। 'काली छोटी मछली' भी चकमक के पहले साल के दो अंकों में प्रकाशित हुई थी।

अमर समद को उनकी 29वीं शहादत बरसी पर चकमक का सलाम।

❑ ***चकमक***

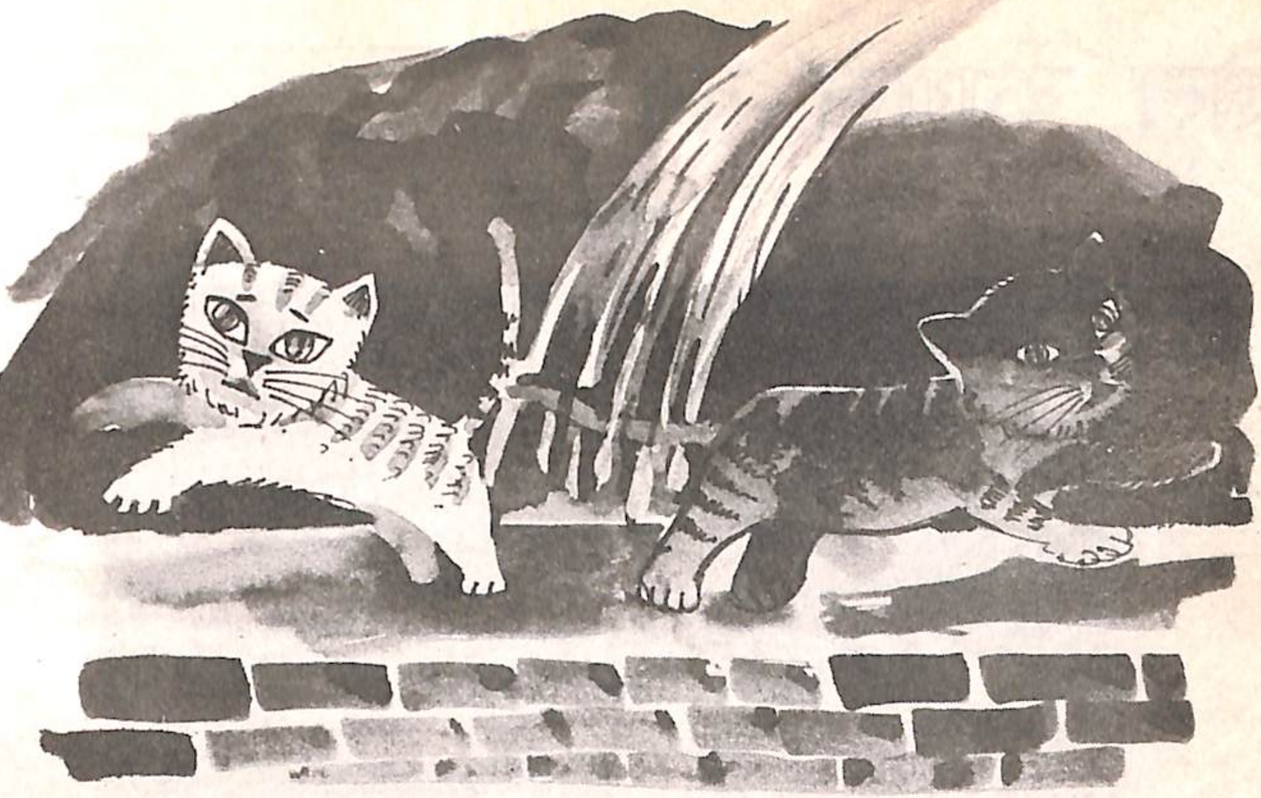

सफ़ेद बिल्ली भड़क गई, बोली, "फिर तुम समस्या हल नहीं करना चाहती हो। उल्टा उलझा रही हो। कह रही हूँ, मुझे ज़रूरी काम है। मेरी बात मान लो और मेरे रास्ते से हट जाओ।"

काली बिल्ली ने और तेज़ आवाज़ में उत्तर दिया, "म्याऊँ। कौन हो तुम मेरी जो मुझ पर यूँ हुकुम चला रही हो? बोलने से पहले आँको तो कि तुम बक क्या रही हो?"

सफ़ेद बिल्ली लपकी और चिल्लाई, "म्याऊँ!..... मैं अपनी कही बातों को ख़ूब समझती हूँ। वास्तव में तुम एक ज़िद्दी बिल्ली हो। मुझे जाना ज़रूरी है। मुझे हसन आगा के घर ज़रूर जाना है क्योंकि वहाँ से मुझे गोश्त की बू आती महसूस हो रही है। क्या अब भी नहीं समझी हो कि मुझे कौन-सा ज़रूरी काम करना है? क्या बहरी हो?"

काली बिल्ली गुस्से में तनकर बोली, "म्याऊँ! .... तुम समझ रही हो कि मैं कोई बेकार हूँ जो लोगों के घरों की दीवारों पर आवारा फिरूँ? मैंने खुद उधर के घर से सालन की बू सूँघी है। मैं ख़ुद बहुत भूखी हूँ। अगर फिर मेरी राह में आई तो ऐसा झन्नाटेदार झापड़ रसीद करूँगी कि दीवार के नीचे गिरोगी और भेजा निकल पड़ेगा।"

सफ़ेद बिल्ली पर जैसे भूत सवार हो गया था। अपने गुस्से को वश में रखना उसके लिए मुश्किल हो गया। चीखकर बोली, "म्याऊँ! .... बेवकूफ़ हट मेरे सामने से! ....फिफ-फ.....! पकड़ो...."

उसने एकदम से अपने पंजे से काली बिल्ली के सिर के बाल नोचे। काले बाल हवा में बिखरे। दोनों एक-दूसरे से गुत्थम-गुत्था हो गईं। एक-दूसरे पर गालियों की बौछार करती हुई नोचने व गुर्राने लगीं।

दोनों बिल्लियाँ लड़ाई में व्यस्त थीं कि किसी ने दीवार के ऊपर से ठण्डा पानी इन दोनों पर डाला। दोनों एकाएक घबरा गईं और तेज़ी से मुड़ीं और दुम दबाकर भाग गईं। उसी तरफ जिधर से आई थीं। पल-भर के लिए भी उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

□□

फारसी से अनुवाद : नासिरा शर्मा

मोर

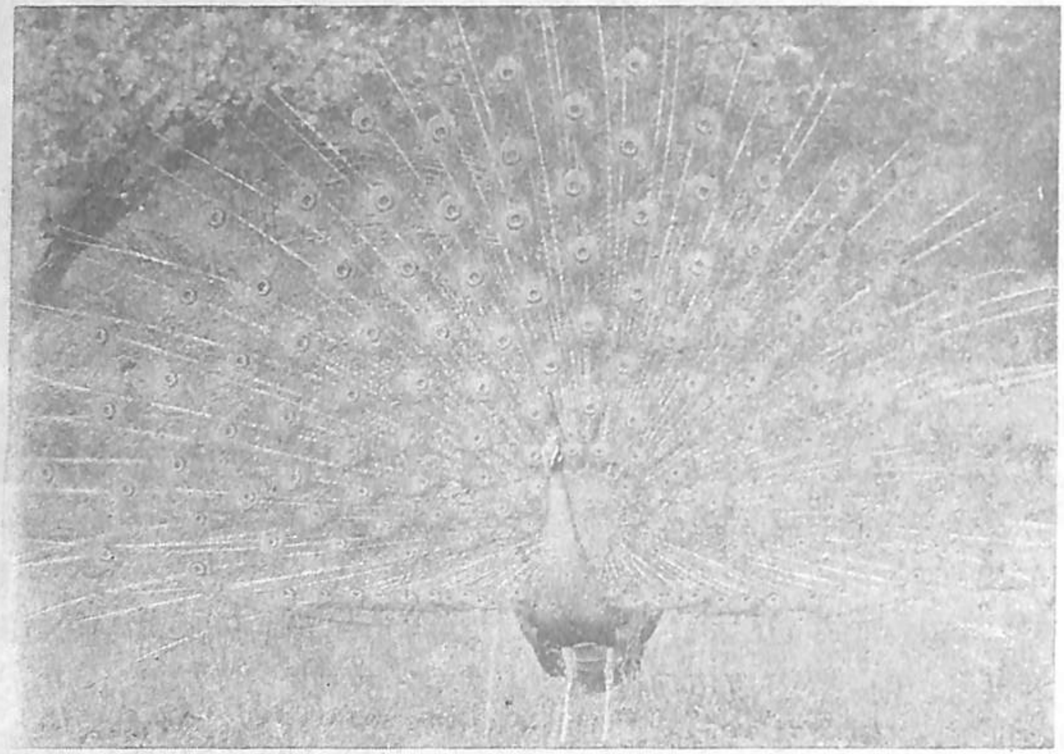

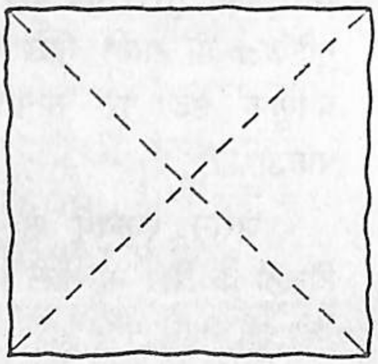

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। इसे चित्र में दिखाए अनुसार टूटी रेखा पर से मोड़कर खोल लो।। फिर कागज़ को पलट लो

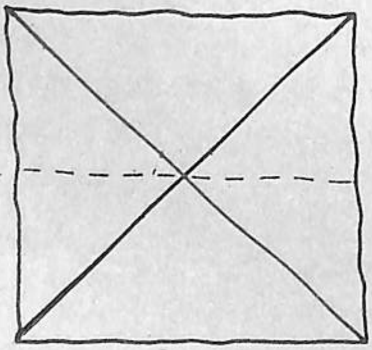

2. अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाकर, पक्के करके खोल लो।

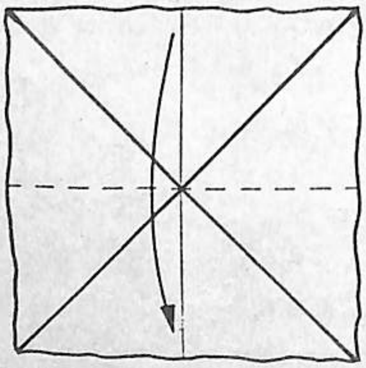

3. एक बार फिर इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।

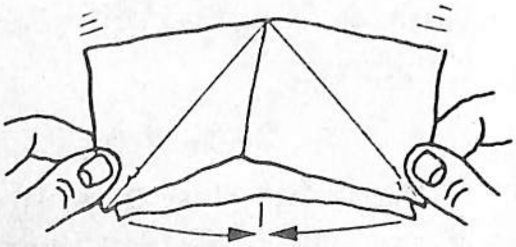

4. इस तरह। चित्र में दिखाए अनुसार आकृति को पकड़कर दोनों सिरों को पास लाओ।

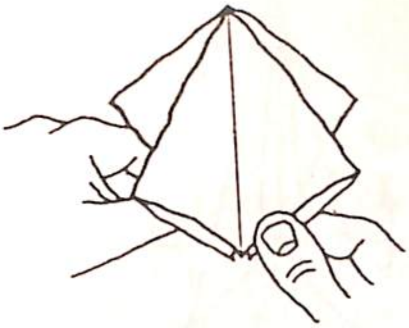

5. इस तरह। इस आकृति को दबाकर सारे मोड़ पक्के कर लो।

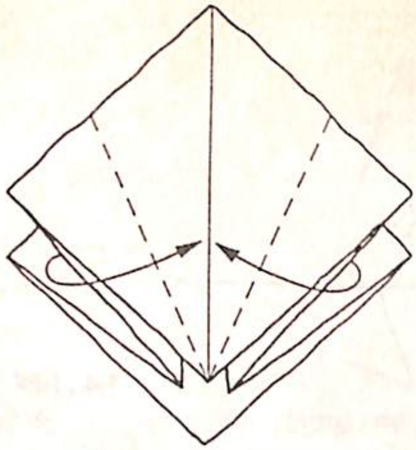

6. यहाँ से आगे के चित्र बड़े करके दिखाए गए हैं। इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से आकृति की ऊपरी दो परतों को तीर की दिशा में मोड़ लो।

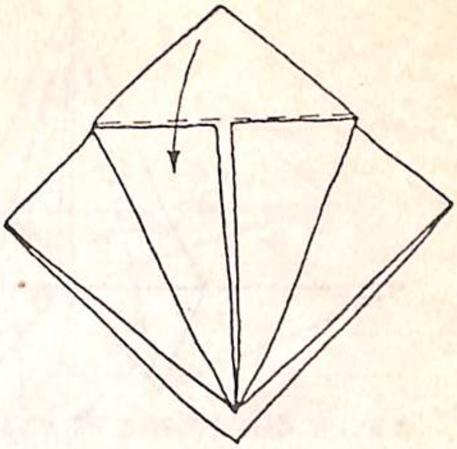

7. चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

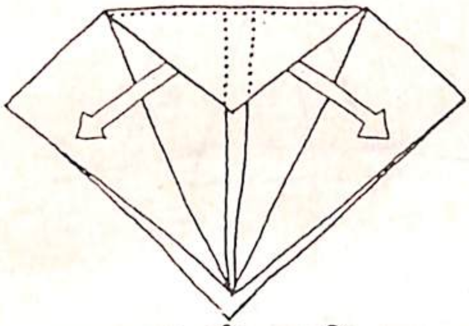

8. इस तरह की आकृति बन जाएगी। चित्र 6-7 में बनाए मोड़ खोल लो।

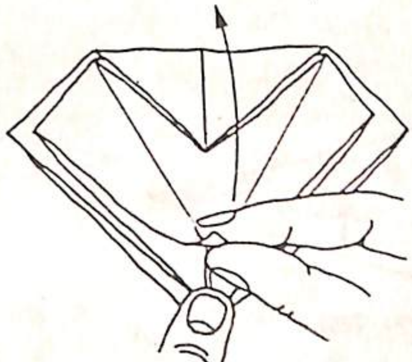

9. अब इस आकृति की ऊपरी परत को पकड़कर तीर की दिशा में ले जाते हुए खोल लो।

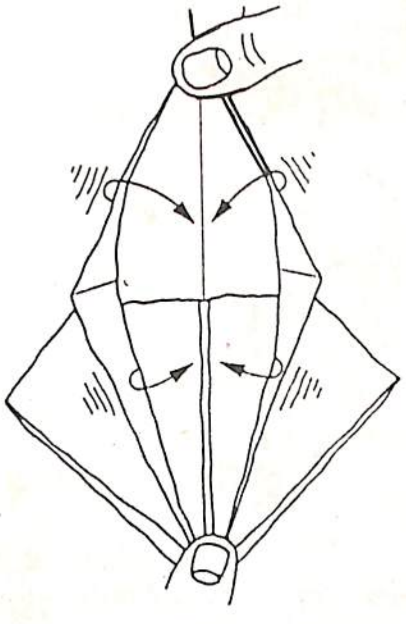

10. इस तरह। अब इस खोले हुए हिस्से को पहले बने हुए मोड़ों पर से तीर की दिशाओं में दबाओ।

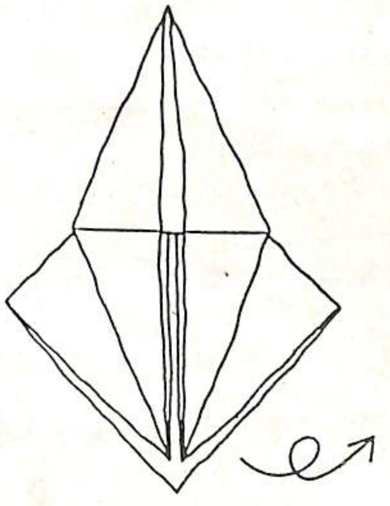

11. इस तरह की आकृति बन जाएगी। आकृति को पलट लो। इस ओर भी चित्र 6 से 10 तक की क्रियाएँ दोहरा लो।

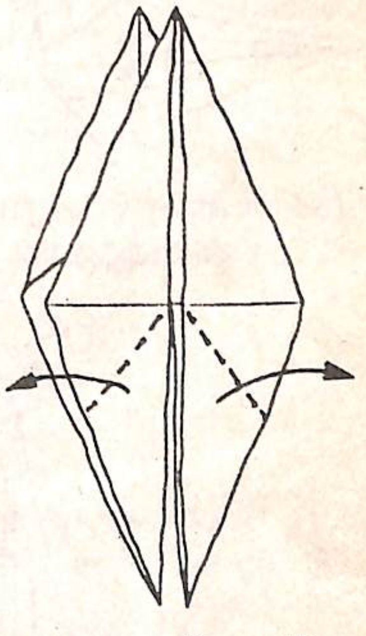

12. इस तरह की आकृति बन जाएगी। इस आकृति में दिख रही आड़ी टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाकर पक्का करके खोल लो। फिर आकृति को पलटकर वहीं से एक बार और मोड़ बनाओ। मोड़ के निशान पक्के करके खोल लो। अब इन निशानों पर से निचले हिस्से को अन्दर की ओर मोड़ लो।

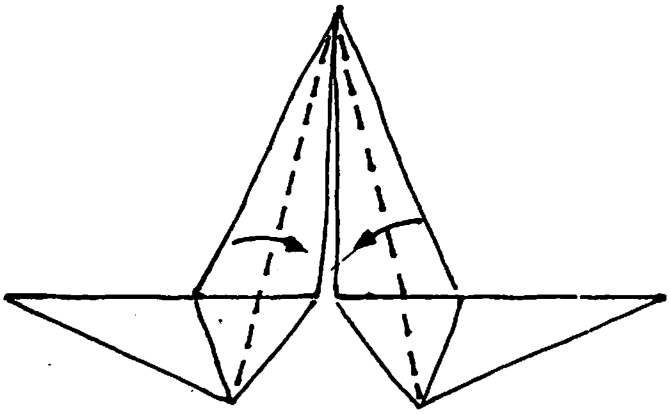

13. यह देखो इस तरह की आकृति बन जाएगी। अब इस आकृति में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में मोड़ लो।

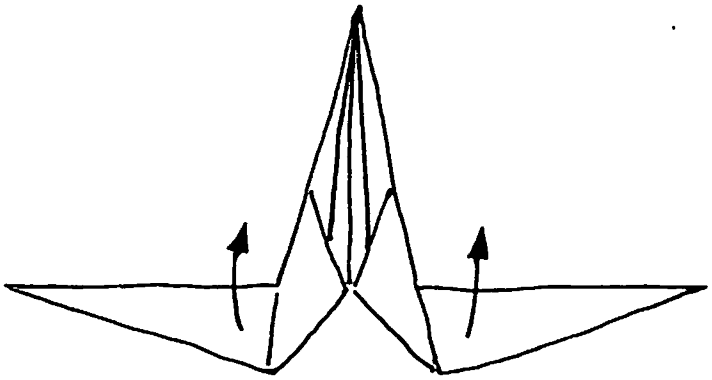

14. चित्र में दिख रहे तीर के निशान से ऊपरी परत को खोलते हुए ऊपर ले जाओ।

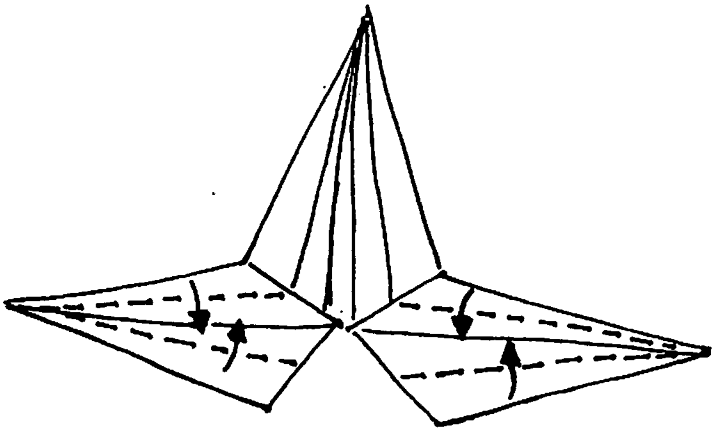

15. ऐसी आकृति बन जाएगी। अब टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में मोड़ बनाओ। आकृति को पलट लो।

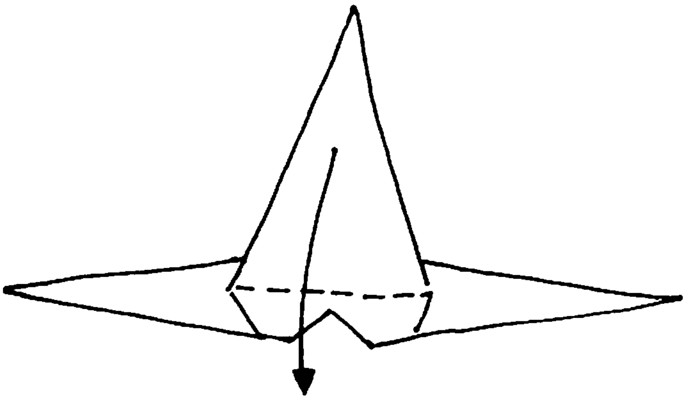

16. अब यहाँ दिख रही टूटी रेखा पर से ऊपरी परत को तीर की दिशा में मोड़ लो। आकृति को पलट लो।

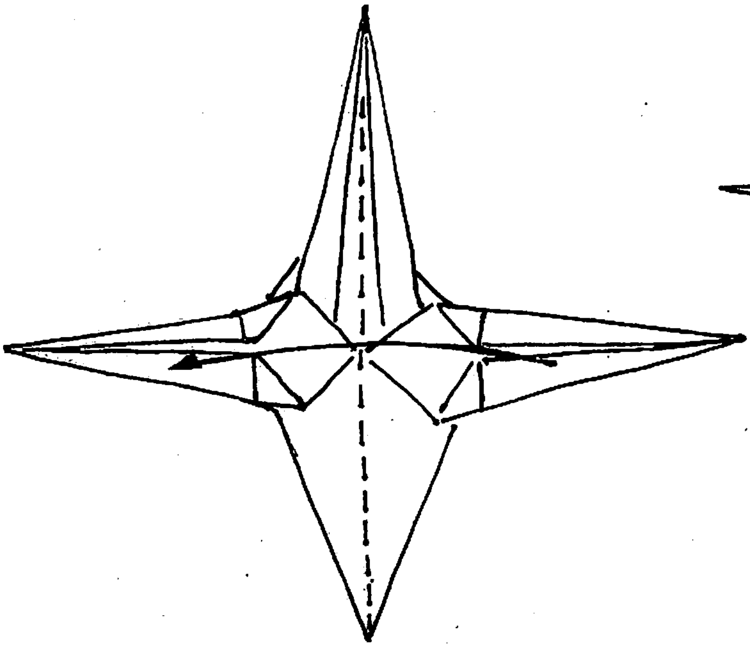

17. इस तरह की आकृति बन जाएगी। इसे टूटी रेखा पर से बीच से मोड़ लो।

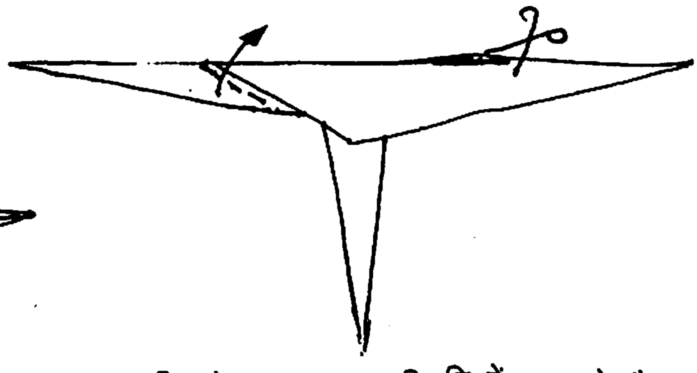

18. आकृति को घुमाकर इस स्थिति में कर लो जैसा चित्र में दिखाया गया है। अब जहाँ कैंची दिख रही है वहाँ कट लगा लो। टूटी हुई रेखा पर से मोड़ बनाकर निशान पक्का करके खोल लो। फिर आकृति को पलटकर उस जगह से मोड़ बनाकर निशान पक्का कर लो।

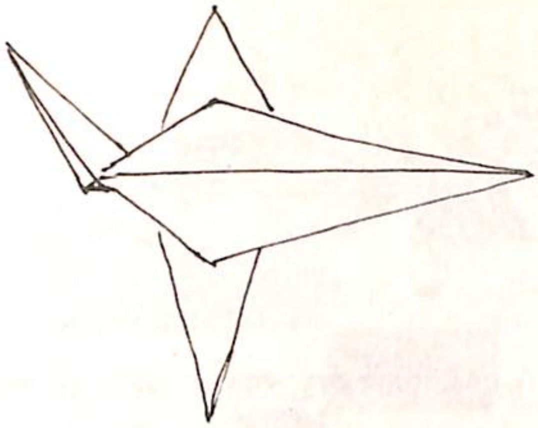

19. चित्र 17 में जो मोड़ बनाया था उसे खोल लो। और चित्र 18 में बनाए हुए निशानों पर से बाएँ हिस्से को मोड़कर ऊपर की तरफ ले जाओ और बाकी हिस्से को नीचे की तरफ।

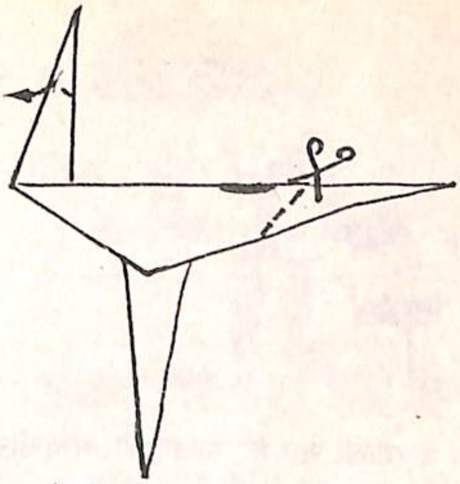

20. इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। निशान पक्का करके खोल लो। आकृति को पलटकर उस तरफ भी इसी तरह का मोड़ बनाकर निशान पक्का करके खोल लो। अब इस निशान पर से ऐसे मोड़ो कि ऊपर का नुकीला सिरा बाईं ओर चला जाए। इस हिस्से से चोंच बनेगी। अब दाएँ हिस्से पर जहाँ कैंची बनी है वहाँ से सीधी रेखा पर से काट लो।

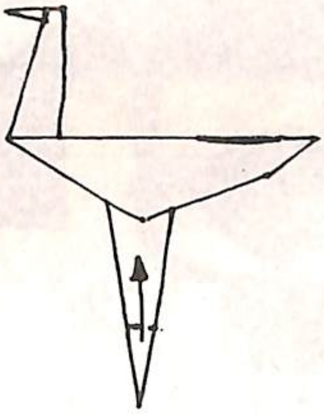

21. इस तरह की आकृति बनेगी। अब चित्र में नीचे दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में एक ऊपरी परत को मोड़ लो। आकृति को पलटकर दूसरी तरफ भी इसी तरह मोड़ लो।

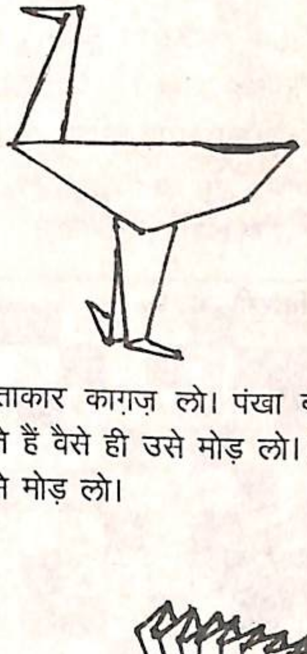

22. एक आयताकार कागज़ लो। पंखा बनाने के लिए जैसे मोड़ते हैं वैसे ही उसे मोड़ लो। फिर पूरी पट्टी को बीच से मोड़ लो।

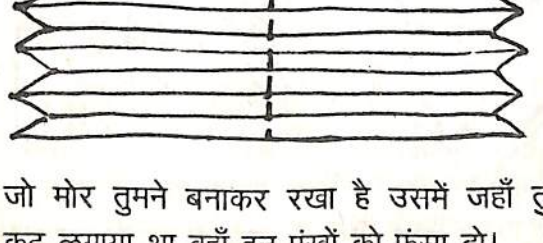

23. जो मोर तुमने बनाकर रखा है उसमें जहाँ तुमने कट लगाया था वहाँ इन पंखों को फंसा दो।

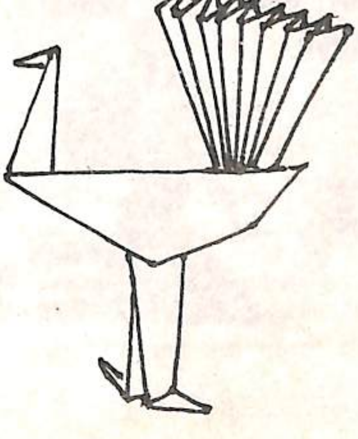

बलराम पोरवाल, सातवीं, बालागुड़ा, मन्दसौर, म. प्र.

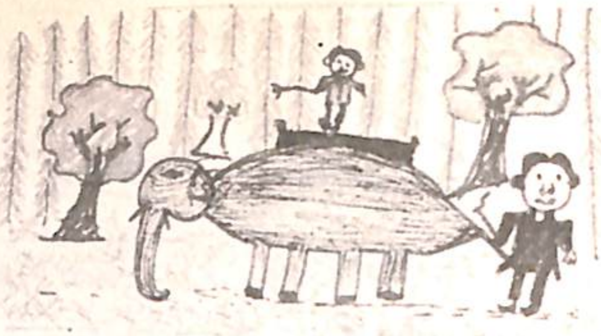

कृष्ण कुमार साहू, रमतला, बिलासपुर, म. प्र.

कुमुद कान्त, किरगी, म. प्र.

राजकुमार शाक्यवार, तीसरी, सेमराहाट, गुना, म. प्र.

निधि वर्मा, दूसरी, इन्दौर, म. प्र.

भरत श्रीमाली, फालना, पांली, राजस्थान

वर्ग पहेली – 74

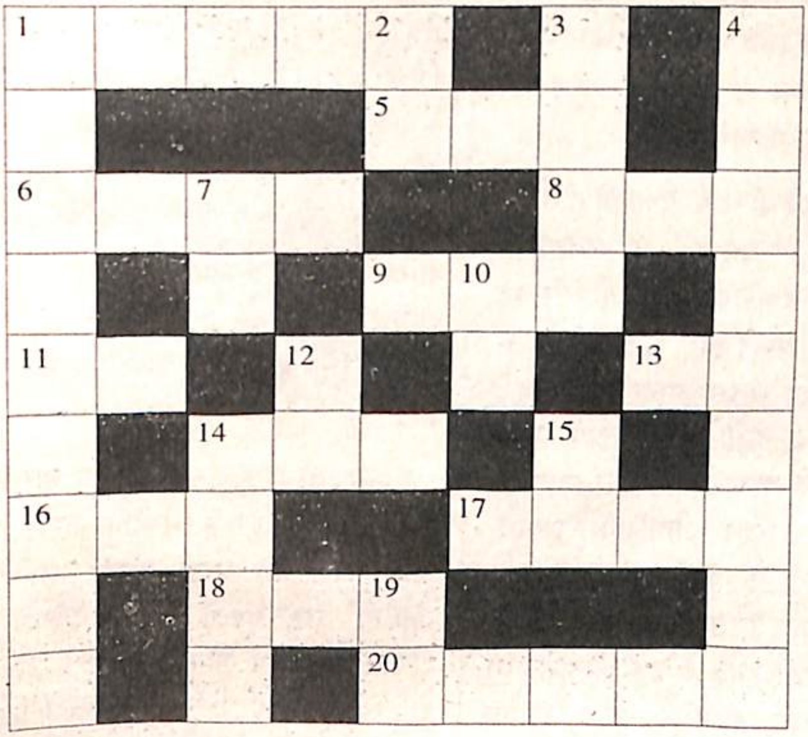

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. म. प्र. के एक बौद्ध तीर्थस्थल की वह इमारत जिसमें बुद्ध के कुछ अवशेष रखे गए हैं (2,1,2)
5. पताका लीन है, पर बिछा हुआ है (3)
6. .... नहीं सिखाता आपस में बैर रखना (4)
8. कपड़ा बुनने का यंत्र (3)
9. भारत के पहले राष्ट्रपति का जन्म प्रदेश (3)
11. बेटा भी, रंग भी (2)
13. एक पड़ोसी देश की राजधानी (2)
14. नमन में सोच-विचार (3)
16. नवजात की काट-छाँट में छुटकारा (3)
17. कमर में पहना जाने वाला गहना (4)
18. बुद्धि (3)
20. मुहावरे में बेकार रहकर समय बिताना (2,3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. बिना कोई नुकसान उठाए काम पूरा हो जाना, एक मुहावरा (2,2,2,1,2)
2. सकपकाने में वह है जो कच्चा नहीं (2)
3. जुलाहा (4)
4. मुहावरे में 'बहुत अनुभव होना' (2,2,1,2,2)
7. आहुति में दिया जाने वाला तरल पदार्थ (2)
10. दुख प्रकट करने वाला एक शब्द (2)
12. सुनने का काम करने वाला शरीर का अंग (2)
14. वोट डालना (4)
15. दर्द भी और फकीर भी (2)
19. शान्ति या मोक्ष ढूँढो मशक में (2)

इस पहेली का मूल रूप चम्पालाल कुशवाहा ने हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र. से भेजा है।

वर्ग पहेली 71 का हल

वर्ग पहेली - 71 के सर्वशुद्ध हल भेजे हैं - रविकान्त मित्तल, ब्यावरा, राजगढ़; आयुश शुक्ला, बिर्रा; रत्नाकर पाण्डेय, मुंगेली, दोनों बिलासपुर; आशीष शुक्ला, कसडोल, रायपुर; पद्मा श्रीवास्तव, सिंहपुर, शहडोल; नेहा सिंगारे, सारणी, बैतूल ने। इन्हें चकमक का अगस्त का अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का वह अंक उपहार में भेजा जाएगा जिसमें इस पहेली का हल छपेगा।
वर्ग पहेली – 74 का हल नवम्बर , 1997 के अंक में देखें।

सवालीराम

■ **बर्फ़ जमी झील के नीचे जलीय जीव कैसे रहते हैं?**

अरविन्द सोनी, बीकानेर, राजस्थान

□ तुम्हारे इस सवाल से तो एकबारगी मैं भी चकरा ही गया। सचमुच झील जम जाए तो उसमें रहनेवाले जीव-जन्तु कहाँ जाएँगे ? बर्फ़ में कैसे कोई जिए भला ! लेकिन यहाँ सवाल यह उठता है कि क्या कोई झील या सागर (जलाशय) पूरी तरह जम जाता है? इसका उत्तर है - नहीं। जी हाँ ! आमतौर पर ऐसा नहीं होता है कि जलाशय पूरी तरह जम जाए। इसलिए जलाशय में पल रहे जीव- जन्तुओं को इस तरह का कोई ख़तरा पैदा नहीं होता।

अब यह प्रश्न तुम्हें परेशान कर रहा होगा कि आख़िर क्यों नहीं जमता पूरा जलाशय? ज़रा जाड़े के मौसम की याद करो। इतनी कड़क ठण्ड कि दाँत कटकटा जाएँ। बचाव में तुमने ऊनी कपड़े भी पहन रखे हैं। फिर भी कहीं- न- कहीं से ठण्ड लग रही है। शायद हाथ खुले हैं, कान में कुछ बाँधा नहीं है। ठीक पकड़ा तुमने। इस बात पर गौर करें तो हमें यह समझने में दिक़्क़त नहीं आना चाहिए कि शरीर का जो हिस्सा ठण्ड के सीधे सम्पर्क में है, ठण्ड वहीं सबसे ज़्यादा लग रही है।

जलाशयों में भी ऐसा ही होता है। ऊपरी सतह जो हवा के सम्पर्क में होती है उस पर तापमान की गिरावट का सीधा असर होता है। यानी जैसे- जैसे जाड़ा बढ़ेगा पानी की ऊपरी सतह ठण्डी होती जाएगी। ठण्डा पानी गरम पानी की अपेक्षा भारी होता है। क्योंकि उसका आपेक्षिक घनत्व, गरम पानी के आपेक्षिक घनत्व से ज़्यादा होता है। इसलिये पानी की जो परत ठण्डी होती है वह जलाशय में नीचे बैठती जाती है। और उसकी जगह नीचे की गरम परत, यानी कम घनत्व वाला पानी लेने लगता है। यह प्रक्रिया तब तक होती रहती है जब तक ठण्डा होते- होते पानी की किसी परत का तापमान 4° सेल्सियस तक पहुँच नहीं जाता है।

पानी का यह एक विशिष्ट गुण है कि 4° सेल्सियस पर उसका आपेक्षिक घनत्व सबसे अधिक होता है। यानी दूसरे किसी तापमान की तुलना में इस तापमान पर पानी ज़्यादा सघन होता है। सो, ऊपरी परत का तापमान 4° सेल्सियस होने पर वह नीचे बैठ जाता है। इसके बाद सबसे निचली परत को छोड़कर बाक़ी सारे पानी में तापमान के अनुसार परतों के ऊपर- नीचे होने का क्रम चलता रहता है। तब तक, जब तक कि सारा का सारा पानी 4° सेल्सियस तक ठण्डा न हो जाए। 4° सेल्सियस पर यह क्रम थम जाएगा, चाहे मौसम कितना भी ठण्डा क्यों न हो।

यह तो तुम समझ ही गए होगे कि ऐसा क्यों होता है। क्योंकि जैसे- जैसे पानी की परतें ठण्डी होती जाएँगी, उन परतों का आपेक्षिक घनत्व भी कम होता जाएगा। 3° सेल्सियस वाला पानी 4° सेल्सियस वाले पानी से हल्का होगा इसलिए उसके ऊपर तैरेगा। यानी जितना ठण्डा पानी, उतना हल्का। इसलिए उसकी परत भी उतनी ही ऊपर वाली बनेगी। ऊपर की ठण्डी सतह अब नीचे नहीं जाकर ऊपर ही तैरती रहेगी।

0° सेल्सियस पर बर्फ़ जमना शुरू होगी जो कि पानी की इन ठण्डी परतों से और भी हल्की होने के कारण ऊपर ही तैरती रहेगी। जाड़ा जैसे- जैसे बढ़ेगा, जलाशय के ऊपर

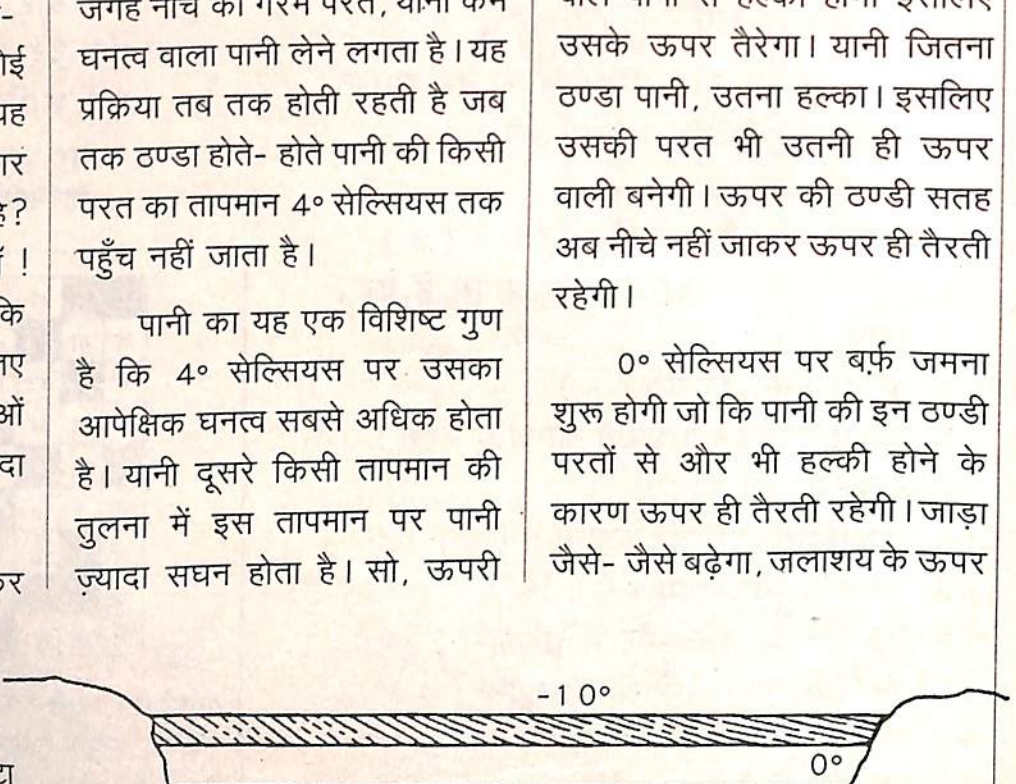

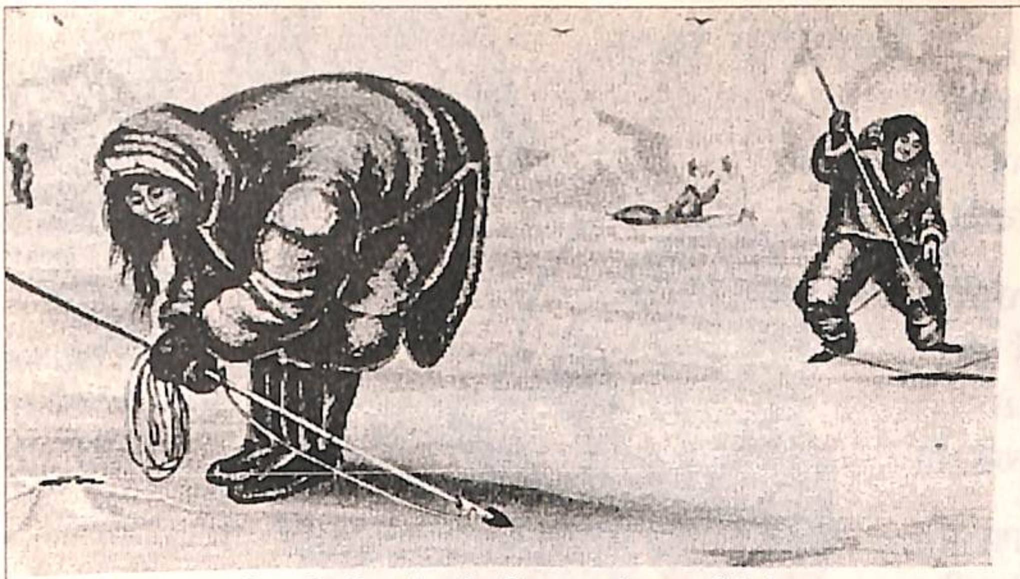

बर्फ़ जमी झील से बर्फ़ की परत खोदकर नीचे के पानी में तैरती मछलियाँ मारते इस्कीमो

और असमतापी जीव जैसे छिपकली, साँप, मछली और अधिकतर जलचर। समतापी जीवों के शरीर का तापमान सभी स्थितियों में स्थिर ही रहता है, चाहे बाहर के वातावरण के तापमान में कितना भी उतार-चढ़ाव हो रहा हो। लेकिन असमतापी जीवों के शरीर के तापमान में बाहरी वातावरण के तापमान के मुताबिक घट-बढ़ होती रहती है।

तैरती बर्फ़ की परत और भी मोटी होती जाएगी। लेकिन यह परत चाहे जितनी मोटी हो जाए अपने कम घनत्व के कारण जलाशय के ऊपर ही तैरती रहेगी, डूबेगी नहीं। और तुम शायद जानते हो कि बर्फ़ उष्मा की कुचालक है। इसलिए जलाशय के ऊपर जमी हुई बर्फ़ की परत नीचे के पानी के लिए कुछ हद तक ढाल का काम करेगी।

तो अब पूरी बात को समेटते हैं। एक तो यह कि पानी 4° सेल्सियस पर सबसे ज़्यादा सघन होता है। इसलिए जब तक किसी जलाशय का पूरा पानी 4° सेल्सियस तक ठण्डा नहीं हो जाता, उसका कोई भी हिस्सा इससे ज़्यादा ठण्डा नहीं हो पाता। इसलिए गहरी झीलों और जलाशयों में आमतौर पर बर्फ़ जमने की नौबत ही नहीं आ पाती। क्योंकि इस प्रक्रिया के पूरे होने में जितने लम्बे समय तक जाड़े की ज़रूरत पड़ती है, जाड़ा कभी उतनी देर तक ठहरता नहीं है। रही बात उन जगहों की जहाँ काफ़ी ठण्ड पड़ती है। तो ऐसी जगहों पर भी जब पानी की ऊपरी सतह जम जाती है, तब पानी में रहने वाले जीव- जन्तु निचले हिस्सों में उतर जाते हैं। वहाँ वे सुरक्षित रहते हैं।

अब तुम्हारे सवाल के दूसरे पहलू पर आते हैं। वह यह कि जब पानी की ऊपरी परत बर्फ़ में तब्दील हो जाती है और पूरे पानी का तापमान 4° सेल्सियस तक गिर जाता है तो जलीय जीव कैसे जीते हैं? साफ़ बात है कि ऐसे में उन्हें कठिनाइयाँ तो आती ही हैं। लेकिन इन जलचर जीवों के कुछ ऐसे भी गुण हैं जो इन्हें ऐसी आपातकालीन परिस्थितियों से बचाते हैं। एक गुण है इन जलचर जीवों के ख़ून के तापमान का स्थिर न होना।

आमतौर पर जीवों को उनके ख़ून के आधार पर दो भागों में बाँटा जा सकता है। समतापी जीव, जैसे मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली आदि स्तनपायी

जब किसी झील के पानी का तापमान गिरता है तो पहले तो उसके बाशिन्दे उपयुक्त तापमान की तलाश में भटकते हैं। अगर ऐसी कोई जगह उन्हें न मिले तो उनके शरीर का तापमान भी गिरने लगता है। इसके साथ ही वे खुद को शिथिल कर लेते हैं, अपनी शारीरिक गतिविधियाँ ठप्प कर लेते हैं। इसे शीतनिद्रा भी कहा जाता है। इस स्थिति में जीवित रहने के लिए उन्हें बहुत कम ऊर्जा की ज़रूरत होती है। इतनी ऊर्जा उन्हें अपने शरीर में जमा वसा ख़र्च करके ही मिल जाती है। लेकिन तापमान की गिरावट का यह समय अगर बहुत लम्बा खिंच जाए तो इन जीवों की जान पर भी बन सकती है।

शुक्र है, कि न तो झील या जलाशय नीचे से जमना शुरू होते हैं न ही जाड़ा इतना लम्बा खिंचता है। तभी तो जलचर जीव इन प्राकृतिक खूबियों और अपने शारीरिक गुणों की मदद से खुद को बचाए रखने में सफल होते हैं।

■ ■ ■

तितली

फूलों पर बैठा करती है
फूलों पर आती है तितली
पीले हरे लाल पंखों पर
झूल झूल जाती है तितली

कोमल कोमल छोटी-छोटी
हलकी हलकी छुईमुई सी,
छूने पर लगता है जैसे
यह तितली है नरम रुई सी

अपनी गुपचुप सी भाषा में
जाने क्या गाती है तितली

मुकेश सिंह ठाकुर, छठवीं, कोटमी सुनार, बिलासपुर, म. प्र.

अर्पित जैन, छठवीं, कानपुर, उ. प्र.

श्रीजा, पहली, भोपाल, म. प्र.

फूल फूल की यही मित्र है
कलियों से बातें करती है
कोई अगर पकड़ने आता
तो अपने मन में डरती है

अपनी सुन्दरता पर जैसे
रह रह इतराती है तितली

इसे देखते रहो हमेशा
उड़ते नन्हे से पंखों पर
दिनभर खुशी लुटाती रहती
खुशियों से भरती आँगन-घर

यह तारे जैसी लगती है
सबको ही भाती है तितली
फूलों पर बैठा करती है
फूलों पर आती है तितली।

श्रीप्रसाद

लोकेश पाटीदार, छठवीं, मानपुर, इन्दौर, म. प्र.

बूझो पहेलियाँ

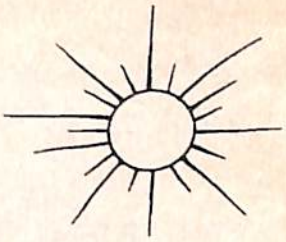

(1)
सब मारे तब जी उठे,
बिन मारे मर जाए।

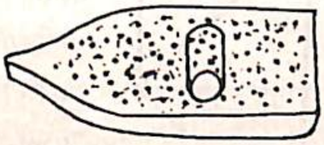

(2)
इधर नदी उधर नदी,
बीच में हवेली।
डगमग वह चली,
तुम बूझो पहेली॥

(3)
सब कोई जब चले जाएँ,
बूढ़ा लटक के रह जाए।

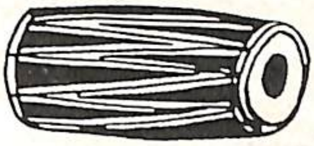

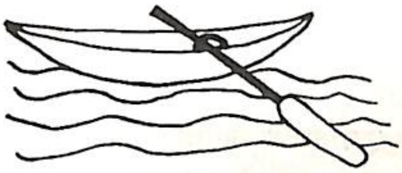

(4)
पत्थर की नाव, पत्थर का सवार,
खड़ी रहे नाव, चलता रहे सवार।

(5)
चार पैर का डॉक्टर,
बिन बुलाए आए।
एक सुई लगाकर
थप्पड़ खाकर मर जाए।

(6)
एक प्लेट में दो रसगुल्ले,
एक गर्म एक ठण्डा।

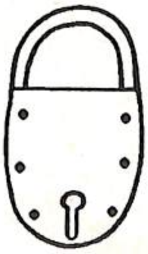

पहेली नं. 1,2,3 हेमलता सोनी ने हिरनखेड़ा, होशंगाबाद से
व पहेली नं. 4,5,6 पारुल बत्रा ने टीकमगढ़ से भेजी हैं।

माथापच्ची

(1)

नीचे संख्याओं की एक सीरीज़ दी गई है। बीच में से एक संख्या नदारद है। सीरीज़ का क्रम पता करो और उसके आधार पर बताओ कि नदारद संख्या क्या होगी।

79,87, ?, 89,83,91,85, ...

(2)

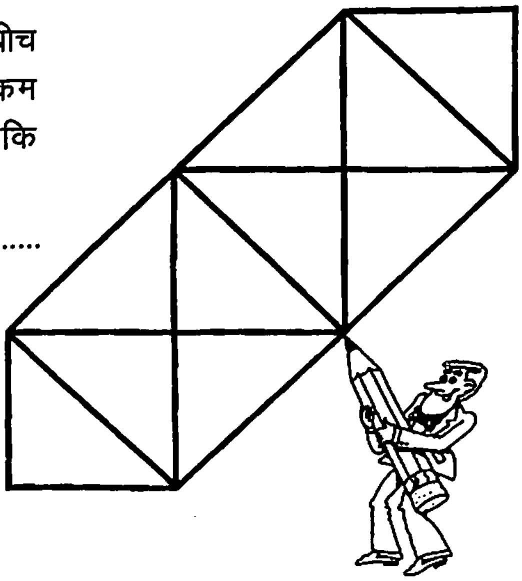

एक और अटूट लकीर वाली पहेली। तुमने ऐसी कई पहेलियाँ हल की होंगी जिसमें किसी चित्र को बग़ैर पेंसिल उठाए और किसी लकीर को बिना दोहराए पूरा बनाना होता है। इसे भी ऐसे ही बनाना है। ये जनाब पेंसिल उठाए तुम्हारा ही इन्तज़ार कर रहे हैं। तो उठाओ पेंसिल और शुरू हो जाओ।

(3)

एक प्यारी-सी लड़की एक दुकान में इशारे से दुकानदार को बताती है कि उसे क्या चाहिए। दुकानदार यह जानता था कि वह लड़की न बोल सकती है, न सुन सकती है। इसलिए वह तुरन्त उसकी ओर ग़ौर से देखता है। लड़की पहले अपनी उँगली को मेज़ पर कलम की तरह चलाती है और फिर उँगली को दूसरे हाथ की मुट्ठी में बन्द करके गोल-गोल घुमाने लगती है। दुकानदार समझ जाता है कि उसे पेंसिल छीलने का कटर (शार्पनर) चाहिए। वह उसे शार्पनर दे देता है।

फिर उसी दुकान में एक ऐसा आदमी आता है, जो देख नहीं सकता। अगर उसे कैंची ख़रीदनी हो तो वह दुकानदार को कैसे समझाएगा?

(4)

क्या तुम बता सकते हो कि इस वर्ग में जो दो गोले (वृत्त) बने हैं उनके क्षेत्रफल का अनुपात कितना होगा? उनके अर्धव्यास का अनुपात तो तुम्हें चित्र से पता चल ही गया होगा।

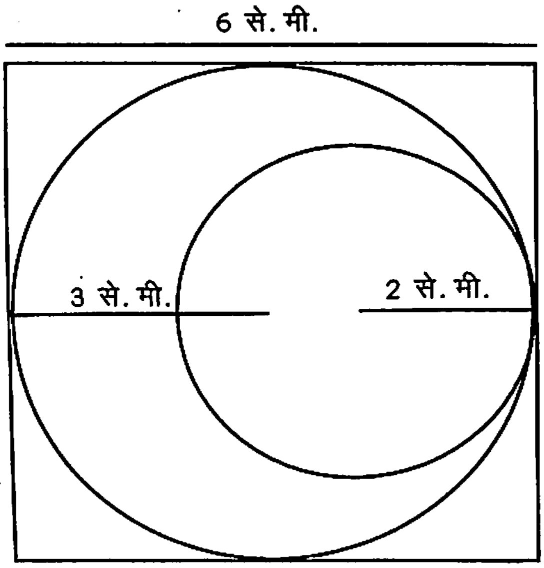

(5)

पिछले महीने स्कूल वाले हमारी क्लास को पिकनिक पर ले गए थे। आने-जाने के लिए एक मिनी बस किराए से ली। उसका ख़र्चा हमारी क्लास के सब बच्चों ने आपस में बराबर-बराबर बाँट लिया। खाने-पीने का सारा इंतज़ाम स्कूल वालों और हमारे टीचरों ने किया था।

बस में टीचरों के बैठने के बाद 24 सीटें ख़ाली थीं। बस का कुल किराया बना 616 रुपए। अब अगर तुम्हें हम यह भी बता दें कि हमारी क्लास में 20 से अधिक बच्चे हैं, बस में सभी के बैठने की जगह थी। और किराया चुकाने में सबको रुपए ही देने पड़े, पैसे नहीं। तो क्या तुम बता सकते हो कि हम कितने बच्चे पिकनिक पर गए थे?

(6)

बोर्ड पर लिखने वाले चॉक की पहेली है यह। क्या तुम चार चॉक इस तरह से जमा सकते हो कि हरेक बाक़ी तीनों को कहीं-न-कहीं से छू रहा हो? चाहो तो असली चॉक लेकर कोशिश कर देखो। यह ध्यान रखना कि चॉक टूटे न हों, पूरे-पूरे हों।

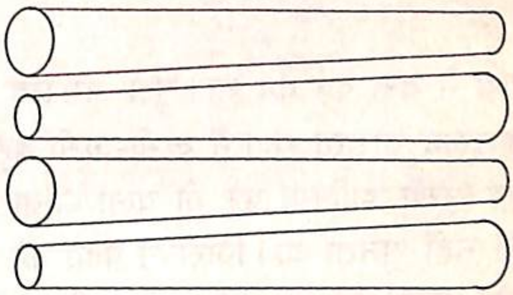

(7)

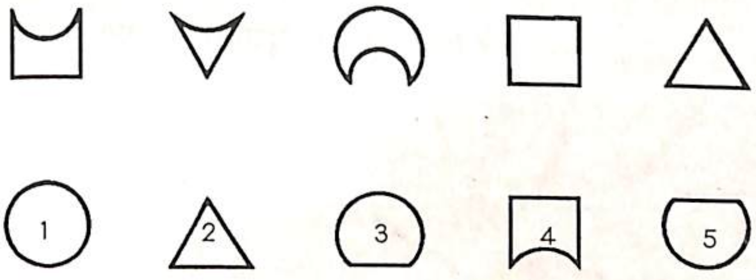

ऊपर के चित्र एक ख़ास क्रम में बने हैं। पर छठवाँ चित्र खिसककर नीचे की लाइन में आ गया है। नीचे बने चित्रों में से कौन-सा ऊपर के चित्रों के क्रम को पूरा करता है? ढूँढ निकालो उसे।

(8)

आठ कोण वाले सन्दूक में कितनी सतह होती हैं?

(9)

कौन सी संख्या बड़ी होगी, एक किलोमीटर में आने वाले मीटर या एक हफ्ते में आने वाले सेकण्डों की?

माथा पच्ची : हल जुलाई, 97 अंक के

2. $4 + 4 + 4 + \sqrt{4} = 14$

   $4 \times 4 - \frac{4}{4} = 15$

   $4 \times 4 + \frac{4}{4} = 17$

3. ख़ाली जगह पर 10 आएगा क्योंकि पूरे गोले में आमने सामने की संख्याओं में एक सम्बंध है। क्या है वह सम्बंध ये तुम खोजो।

4. 18 वर्ग हैं।

6. 50 प्रतिशत सम्भावना है कि सखाराम के घर का दूसरा बच्चा लड़की है।

7. 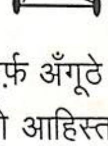

8. सिर्फ़ अँगूठे और तर्जनी की मदद से काग़ज़ के छल्ले को आहिस्ता से पकड़कर झटके से खींचो। दो-चार बार अभ्यास करने के बाद सीख जाओगे।

मौसम

मेरा पन्ना

देखो यह कैसा मौसम आया।
बादल गरजे आँधी आई।
और उनके साथ वर्षा आई।
अब बच्चे चहलपहल करने लग गए।
चिल्लाते मस्ती करते और गाना गाते हैं।
कितने अच्छे कितने प्यारे सबके मन को भाते हैं।

अनीता पटेल, छठवीं, क्षिप्रा, इन्दौर, म. प्र.

संदीप कुमार, 14 वर्ष, गोरमी, भिण्ड, म. प्र.

पेड़ से गिरा

तब मैं दस वर्ष का था। मुझे अमरूद खाने का बहुत शौक था। मैं अमरूद के पेड़ पर चढ़कर अमरूद तोड़ता था। मैं कभी-कभी बहुत ऊपर तक चढ़ जाता था। अमरूद के लालच में मैं पतली एवं सूखी डालियों पर भी चला जाता था। पापा ने मुझे कई बार मना किया लेकिन मैं पापा की एक भी नहीं सुनता था। जिसका पापा को डर था एक रोज़ वही हो गया और मैं अमरूद के पेड़ पर से गिर गया। मेरे साथ मेरा मित्र भी था। उसने ये ख़बर पापा को दी। पापा ने डॉक्टर को फ़ोन करके बुलाया। दस दिन बाद मैं पूरी तरह ठीक हो पाया।

शिवम कुमार, सुरपतगंज, सुपौल, बिहार

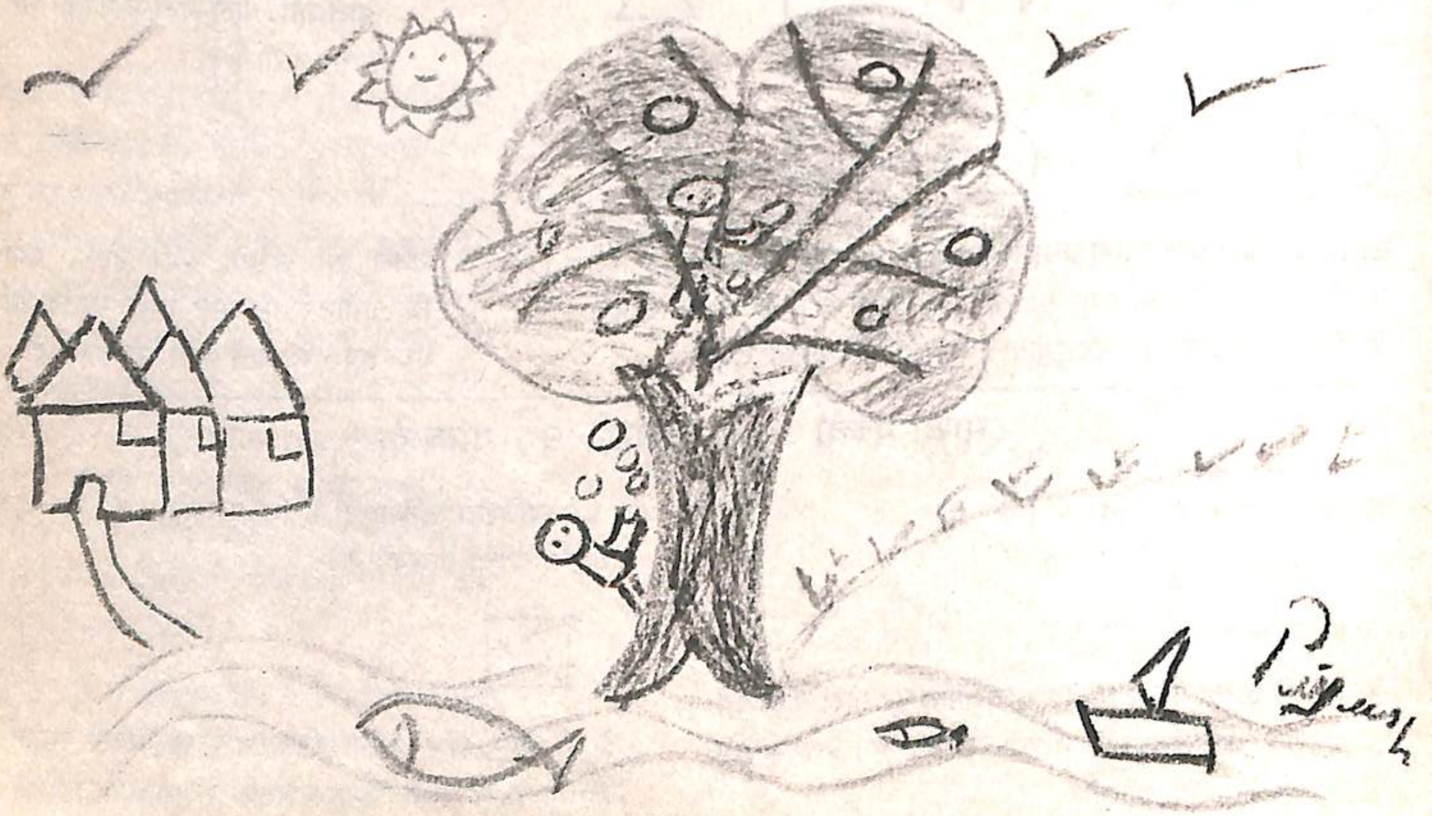

पीयूष, धार, म. प्र.

पानी

पानी को बन्द होने दो
धरती को पानी पीने दो
हवा को थोड़ा थमने दो
सब कीच अरे मिट जाएगा
धरती फरका जाएगी
तब चलने में सुविधा होगी
इमली भी फरका जाएगी
फिर बीनने में सुविधा होगी
इमली अच्छी लगेगी
और खट्टी मीठी लगेगी
तब बहुत मज़ा आएगा

अरविन्द नितेश पटेल, क्षिप्रा, इन्दौर, म. प्र.

मयूरी, पाँचवीं, लूनेसरा, धार, म. प्र.

हमारी सैर

एक दिन जब स्कूल गए तो हमें पता चला कि कल भूदान ज़ाएँगे तो हम बहुत खुश हुए। मैं छतरगढ़ में पढ़ती हूँ। दूसरे दिन हम आए। सर ने कहा कि टिफिन, केतली आदि ले लो। हमने यह सब ले लिया और हमारी कालोनी वाली लड़कियाँ सब गईं। बाद में सर ने हमारी लम्बी लाइनें बनाईं और फिर चलना शुरू किया। हमें सर ने कहा कि भूदान बहुत दूर है इसलिए तीन से आठ तक वाली क्लास गई। हम टीलों पर से होकर गए, बीच में बड़ी नहर आई। इन्दिरा गाँधी नहर, हम उस पर से होकर तीन किलोमीटर की दूरी पर गए। वहाँ पर बड़ा कमरा था। कुछ झोपड़ियाँ थीं। हमें सर ने कहा कि ये बोर्ड के शब्दों को कॉपी में लिख लो। हमने लिखा। बाद में लड़कों को कबड्डी खिलवाई गई और हमें खो-खो। यहाँ-वहाँ घूमे और फिर दो बजे खाना खाया। और बाद में वापस चल दिए।

चार बजे हम वहाँ पहुँचे जहाँ मैं सातवीं में पढ़ती थी। अब मैं आठवीं में पढ़ती हूँ। यह सैर मुझे हमेशा याद रहेगी।

दिप्ती चौधरी, आठवीं, छतरगढ़,
बीकानेर, राजस्थान

अंचल शुक्ला, तीसरी, नई दिल्ली

क़िस्सा-बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा। जूज़ेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा बुरातीनो।

अपनी शरारतों के कारण बुरातीनो बिल्ले और लोमड़ी के चंगुल में फँस गया। फिर पुलिस के कुत्ते बुरातीनो को नगर के बाहर गन्दे तालाब में फेंक आए। तालाब के कूबर कछुए ने उसे बचाया। उसने बुरातीनो को उस मूरख नगरी से भाग जाने को कहा। रास्ते में उसे एक पुराना साथी पियेरो मिला। पियेरो ने कहा कि यदि बुरातीनो मलवीना को ढूँढने में उसकी मदद करे तो वह सोने की चाबी का रहस्य बता सकता है।

बुरातीनो के हाँ कहने पर पियेरो ने उसे अपनी कहानी सुनाई। उसने बताया कि कैसे उसे सोने की चाबी का रहस्य पता चला। फिर सिनियोर काराबास से बचकर वह कैसे भागा और वहाँ तक कैसे पहुँचा। कहानी सुनाने के बाद दोनों मलवीना के घर पहुँचे।

कुछ समय बाद ही काराबास बाराबास ने उन लोगों को ढूँढ निकाला। बुरातीनो दौड़कर चीड़ के पेड़ पर चढ़ गया और चोटी पर जा पहुँचा। वहाँ से आवाज़ लगाकर उसने जानवरों, चिड़ियों, और कीड़ों-मकोड़ों से कहा कि हमें कुछ लोग मार रहे हैं। हमें बचाओ। थोड़ी ही देर में वहाँ जंगल के तमाम जीव-जन्तु बुरातीनो तथा उसके साथियों की मदद करने आ गए। फिर उनके बीच घमासान लड़ाई में काराबास बाराबास बुरी तरह हारा। फिर बुरातीनो तथा उसके साथी पास की एक गुफा में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने थोड़ी देर आराम किया। थोड़ी देर बाद गुफा के पास से काराबास बाराबास और जोंकमार गुज़रे। अब आगे पढ़ो ...

बुरातीनो ने अपनी जान जोखिम में डाली

काराबास बाराबास और जोंकमार धीरे-धीरे गुफा के पास से गुज़र गए।

लड़ाई के दौरान जोंकमार झाड़ी के पीछे छिपकर बैठा रहा। जब सब कुछ शान्त हो गया, उसके बाद भी उसने थोड़ा और इन्तज़ार कर लेना उचित समझा, जब तक कि बुरातीनो और आर्तेमोन घनी घास में ओझल नहीं हो गए। इसके बाद वह बाहर निकला, बड़ी मुश्किल से चीड़ के तने से काराबास बाराबास की चिपकी हुई दाढ़ी छुड़ा पाया।

"अच्छी गत बना दी इस छोकरे ने!" जोंकमार ने कहा। "आपकी गुद्दी पर उम्दा किस्म की दो दर्ज़न जोंकें लगानी पड़ेंगी ...."

काराबास बाराबास गरज उठा, "सत्यानाश हो! फटाफट पीछा करना चाहिए इन बदमाशों का!"

काराबास बाराबास और जोंकमार भगोड़ों की खोज में चल पड़े। वे घास हटा-हटाकर हर झाड़ी के अन्दर झाँक रहे थे, हर ठूह की छानबीन कर रहे थे।

उन्होंने एक पुराने चीड़ की जड़ों के पास से अलाव का धुआँ उठते हुए देखा। पर उनके दिमाग़ में यह नहीं आया कि लकड़ी के पुतले इसी गुफा में छिपकर बैठे हुए हैं। और उन्होंने ही अलाव भी जला रखा है।

"इस बदमाश बुरातीनो के मैं टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा!" काराबास बाराबास बड़बड़ा रहा था।

बुरातीनो और उसके साथी गुफा में दुबककर बैठे रहे।

अब क्या किया जाए? निकल भागा जाए? लेकिन आर्तेमोन गाढ़ी नींद में सोया हुआ था। उसके सारे शरीर पर पट्टियाँ बँधी हुई थीं। घाव भरने के लिए उसे कम से कम चौबीस घण्टे का आराम चाहिए था

क्या इतने वफ़ादार कुत्ते को गुफा में अकेले छोड़ जाना उचित होगा?

नहीं, नहीं, साथ निभाना ही होगा। जिएँगे तो साथ-साथ, मरेंगे तो साथ-साथ।

बुरातीनो, पियेरो और मलवीना गुफा में काफ़ी अन्दर जाकर मुँह से मुँह सटाए देर तक

सलाह-मशविरा करते रहे। अन्त में वे इस नतीजे पर पहुँचे : सुबह तक वहीं रुक लिया जाए। गुफा के मुहाने को टहनियों से छिपा दिया जाए और आर्तेमोन की बेहतर देखभाल की जाए।

बुरातीनो बोला, "चाहे जो भी हो, मैं काराबास बाराबास से यह भेद जान ही लेना चाहता हूँ कि वह दरवाज़ा कहाँ है जो सोने की चाबी से खुलता है। दरवाज़े के उस पार ज़रूर कोई आश्चर्यजनक चीज़ छिपी है ... और वह हमें ज़रूर सुखी बनाएगी।"

"आपके बिना मुझे डर लगता है, जी धक-धक करने लगता है," मलवीना ने ठण्डी आहें भरीं।

"और यह पियेरो यहाँ किसलिए है?"

"अरे, वह तो बस कविताएँ सुनाता रहता है..."

"मैं मलवीना की रक्षा करूँगा शेर की तरह," पियेरो अपनी आवाज़ भारी करते हुए बोला। "आप लोग मुझे अभी जानते ही कहाँ हैं ...."

"शाबाश पियेरो, ऐसा तो तुम्हें होना ही चाहिए था!" मलवीना ने कहा।

बुरातीनो काराबास बाराबास और जोंकमार का पीछा करते हुए उसी रास्ते से चल पड़ा, जिधर से वे अभी-अभी गुज़रे थे।

वे शीघ्र ही दिख गए। कठपुतली थियेटर का मालिक एक सोते के किनारे बैठा हुआ था। जोंकमार उसके गुमटे पर जंगली जड़ी-बूटियों का लेप लगा

रहा था। काराबास बाराबास के ख़ाली पेट से गुड़गुड़ और जोंकमार के पेट में कूदते चूहों की चीं-चीं दूर से ही सुनाई पड़ रही थी।

"सिनियोर, हमें कुछ खाने का इन्तज़ाम करना पड़ेगा," जोंकमार कह रहा था, "इन बदमाशों के चक्कर में तो रात गुज़र जाएगी।"

"मैं तो अभी पूरा बकरा हज़म कर जाऊँ, और ऊपर से दो बतख भी," काराबास बाराबास ने उदास होकर कहा।

दोनों दोस्त 'तीन मछली' ढाबे की ओर चल पड़े। उसका साइनबोर्ड दूर से ही दिख रहा था। लेकिन काराबास बाराबास और जोंकमार के पहुँचने से पहले बुरातीनो वहाँ पहुँच गया। वह घास में झुक-झुककर चल रहा था ताकि वे उसे देख न लें।

ढाबे के पास बुरातीनो दबे पाँव मुर्गे की ओर बढ़ा। मुर्गा वहीं पर चहलकदमी कर रहा था। जब उसे अनाज का कोई दाना मिल जाता था, वह गर्व के साथ अपनी लाल कलगी पीछे की ओर झटक देता था। पंजों से ज़मीन खुरचने लगता था और खुशी से मुर्गियों को दावत देने लगता था, "कुकड़ूँ-कूँ!"

"सेनापति जी, मुझे ढाबे में जाना है, लेकिन मुझे कोई देख न सके। बस, चुपके-चुपके! मैं आपकी ख़ूबसूरत रंग-बिरंगी दुम के पीछे छिप जाता हूँ और आप मुझे अलावघर तक पहुँचा ही देंगे। ठीक है न?"

"कुकड़ूँ-कूँ!" मुर्गे ने ज़रा और भी गर्व से कहा।

वह कुछ समझा नहीं था, लेकिन यह दिखाने के लिए कि उसने सब कुछ समझ लिया है, वह शान से ढाबे के खुले हुए दरवाज़े की ओर बढ़ गया। बुरातीनो ने उसे डैनों के नीचे से पकड़ लिया और उसकी दुम तले छिप गया। बड़े घमण्ड से चलता हुआ वह अलावघर के पास पहुँच गया। वहाँ ढाबे का गंजा मालिक बर्तन खनखनाता हुआ अपने काम में मगन था।

"चल भाग यहाँ से, कबाब में हड्डी!" मालिक मुर्गे पर चिल्लाया और उसे ऐसा पैर मारा कि बेचारा

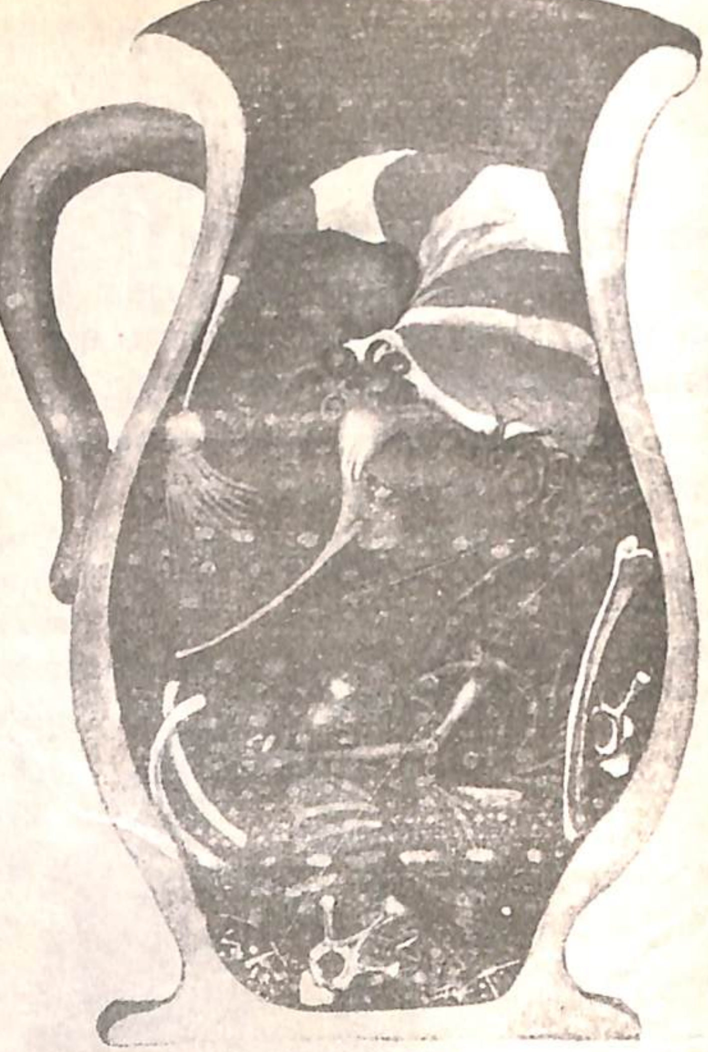

मुर्गा - "कुक-कुड़क-कुक!" - करता हुआ बाहर सड़क पर सहमी हुई मुर्गियों के पास जा पहुँचा।

बुरातीनो चुपके से मालिक के पाँव के पास से निकलकर मिट्टी के एक बड़े से घड़े के पीछे छिप गया। ढाबा मालिक ने उसे देखा भी नहीं।

इसी समय काराबास बाराबास और जोंकमार की आवाज़ सुनाई दी।

ढाबे का मालिक अदब से नीचे झुकता हुआ उनके स्वागत में निकलकर बाहर आया।

तब तक बुरातीनो मिट्टी के घड़े में घुसकर बैठ गया।

(अगले अंक में जारी)

('सोने की चाबी - क़िस्सा बुरातीनो का' से साभार। लेखक : अलेक्सई तोलस्तोय। सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोशिकन)

भारत के पश्चिमी घाट और उड़ीसा, बंगाल तथा उत्तर प्रदेश में पाई जाने वाली एक तितली।

पंखों पर उल्लू की-सी आँख की डिज़ाइन वाली तितली।

बारिश के मौसम में देशभर में सभी जगह दिखाई देने वाली एक तितली।

सूखी पत्तियों की एक टहनी। पर तितलियों के बीच इसका क्या काम? ध्यान से देखो। पत्तियों में एक तितली भी है। तितली के पंखों का रंग और डिज़ाइन बिलकुल पत्तियों जैसा ही है।

यह तितली रेगिस्तानी इलाकों को छोड़कर देश भर में सभी जगह मिलती है।

हिमालय के इलाके में मार्च से अक्टूबर तक दिखाई देने वाली एक तितली।

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/97

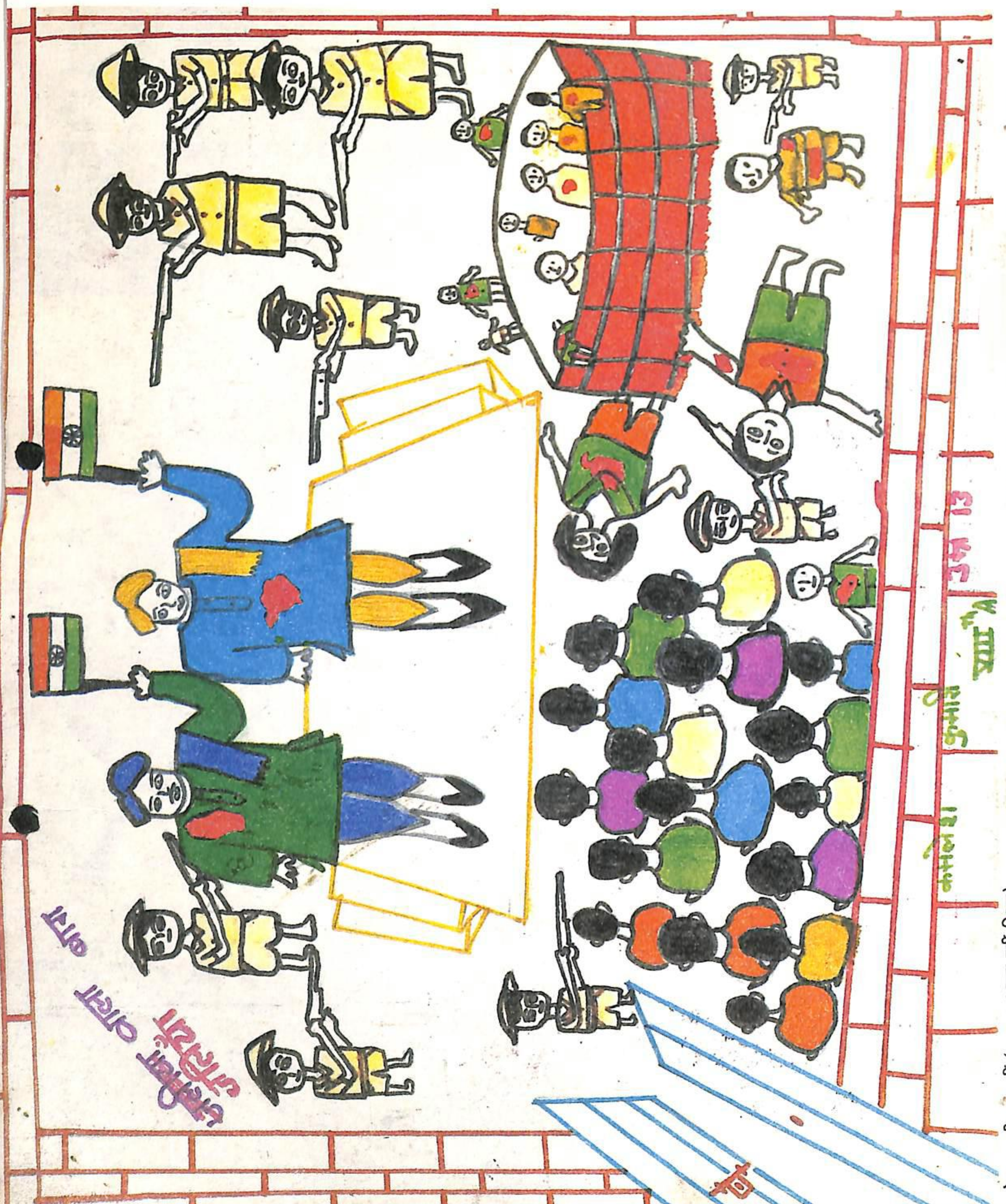

कमलेश कुमारी, ठवीं (जगह का नाम नहीं लिखा)

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना